RNI No. : DELBIL/2021/79984 ₹ 20

सीमा संघोष

जुलाई 2023

प्रधानमंत्री मोदी की फ्रांस यात्रा
सशक्त भारत की नींव

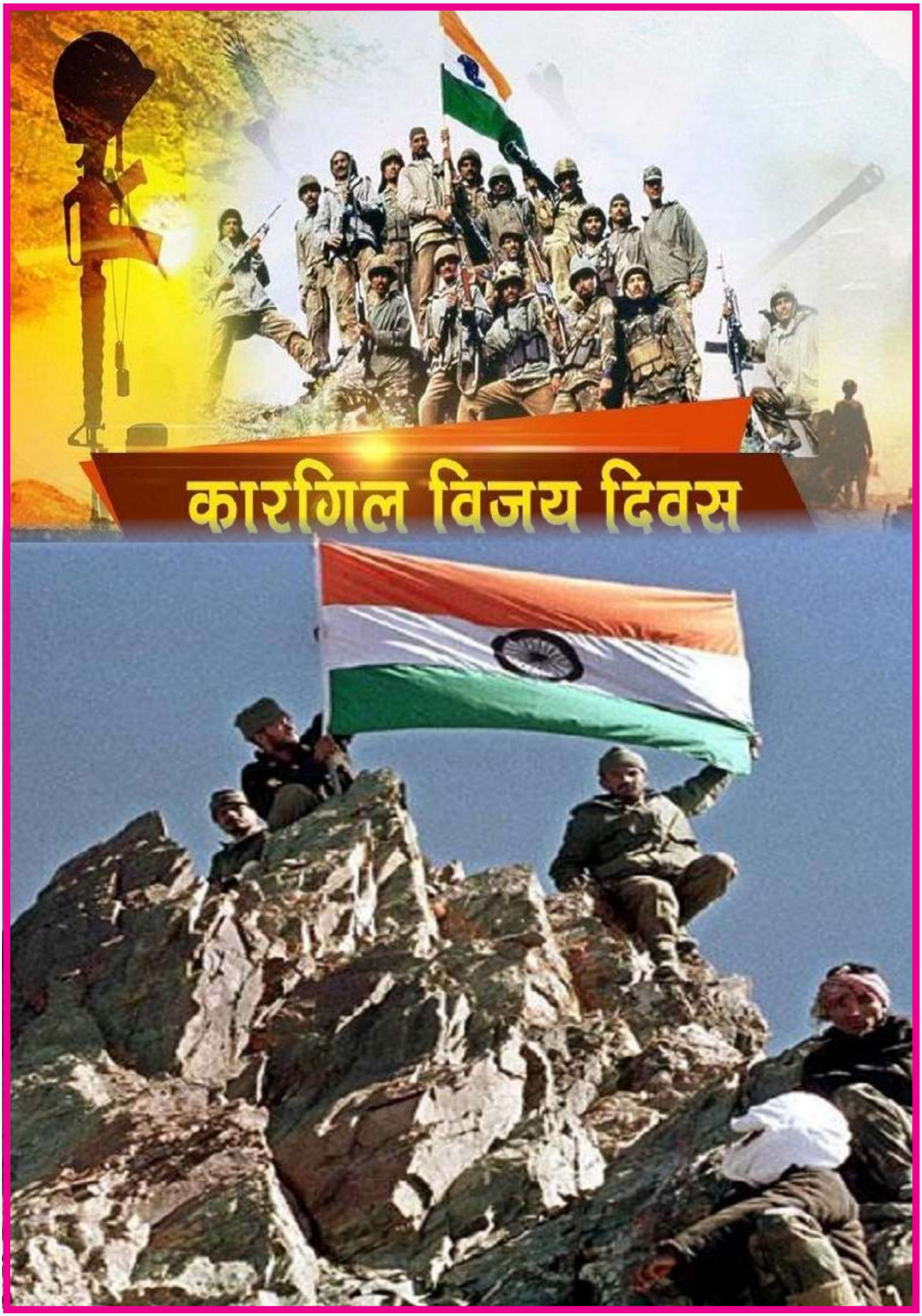
कारगिल विजय दिवस

संरक्षक – प्रो. भगवती प्रकाश शर्मा
मुख्य सलाहकार – ब्रिगेडियर कपिल देव मल्होत्रा
प्रबंध संपादक – श्री रविन्द्र अग्रवाल

मुख्य संपादक – दीपांशु गर्ग
कार्यकारी संपादक – डा. प्रदीप कुमार
संपादक मंडल – श्री राजीव रंजन
– प्रो. चन्द्रवीर सिंह भाटी
– श्री अयोध्या प्रसाद
– डा. राहुल मिश्र

डिजिटल प्रमुख – धीरज झा
डिजाइनिंग – वीरेन्द्र

प्रधान कार्यालय

सीमा संघोष
43/21, तृतीय तल, ईस्ट पटेल नगर
नई दिल्ली-110008, फोन : 9811702522
website : https://seemasanghosh.org/menu.php
e-mail : sanghoshofficial@gmail.com

Published & Printed by Vinay Gupta
On behalf of SEEMA SANGHOSH
Printed at B K offset F- 93,
Panchsheel Garden, Navin Shahdara
Delhi-110032. Publish From 43/21
3rd Floor, East patel Nagar, New
Delhi 110027

प्रकाशकों और लेखकों ने सीमा संघोष की सामग्री के संबंध में अपने अधिकार सुरक्षित रखे हैं। प्रकाशकों की पूर्व लिखित सहमति को छोड़कर कोई भी कॉपीराइट कार्य किसी भी रूप या किसी भी माध्यम से पुन: प्रस्तुत नहीं किया जा सकता है। यहां उपयोग की गई छवियां सार्वजनिक डोमेन से हैं, उनके संबंधित स्वामियों की हैं और केवल जागरूकता और शैक्षिक उद्देश्यों के लिए यहां उपयोग की जा रही हैं। यह पत्रिका गैर-व्यावसायिक, गैर लाभदायक और राष्ट्रीय सुरक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करने का उद्देश्य लेकर प्रस्तुत की गयी है।

इस अंक में

कारगिल विजय दिवस – पवन सारस्वत मुकलावा – 08

सीमांत पर्यटन : देश से जुड़ती सीमाएं – आचार्य अनामय (डॉ. राहुल मिश्र) – 14

हिंदू तीर्थ स्थानों के व्यापारिक प्रतिस्थापनाओं पर मुस्लिम बाहुल्य –डॉ. प्रताप निर्भय सिंह-18

- प्रधानमंत्री मोदी की फ्रांस यात्रा सशक्त भारत की नींव –शैलेश कुमार श्रीवास्तव 05
- धर्मांतरित आदिवासियो का विरोध "डीलिस्टिंग" – हनुमान चौहान 11
- प्रधानमंत्री जी की अमेरिका यात्रा में हुए रक्षा सौदे – देवेन्द्र पुरोहित 12
- लोकतंत्र के लिए खतरा बनता 'सिस्टम' – युवराज पल्लव 17
- रूस के वैगनर ग्रुप के परिप्रेक्ष्य मर्सेनरी सेना पर चर्चा – जवान दान.....24
- अद्भुत आध्यात्मिकता से ओतप्रोत साँस्कृतिक विरासत संरक्षण का प्रयास औरण आरती महोत्सव – जुगत सिंह करनोत 28
- अल नीनो से बढ़ते तापमान के साथ खेती पर मंडराता खतरा – डॉ. परमवीर 'केसरी' 30

सीमा संवाद शृंखला : प्रांत स्तरीय कार्यक्रम – राघवेंद्र नाथ त्रिपाठी 31

संपादकीय.....

बहुध्रुवीय विश्व की ओर बढ़ते भारत का शक्तिशाली होना अनिवार्य है। वैदेशिक संबंधों ने वह दिशा प्रशस्त की है जहाँ भारत भी एक बड़ी ताकत के रूप में उभरता दिखाई पड़ता है। आज ताकत का पैमाना किसी देश के पास उपलब्ध असला-बारूद नहीं अपितु आकलन उसकी मित्रताओं और शत्रुताओं से है। इस दृष्टिकोण से भारत और फ्रांस के मध्य बढ़ता आपसी विश्वास और सहयोग, आने वाले कल की बानगी कहा जा सकता है। हमें स्मरण रखना चाहिए कि फ्रांस की मदद से ही वर्ष 1974 में भारत ने अपना पहला परमाणु परीक्षण किया था। इसी तरह भारत ने जब वर्ष 1998 में पोखरण में परमाणु परीक्षण किया तो हमें अनेक प्रतिबंधों का सामना करना पड़ा था। वह समय था जबकि भारत आर्थिक दृष्टि से भी संघर्ष कर रहा था ऐसे में भी अमेरिका, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन के साथ-साथ विश्व के अनेक देशों ने तरह तरह के प्रतिबंध लगा दिए थे। उन समयों में फ्रांस ने यूरोप के नजरिए से अलग हट कर भारत का साथ दिया, तत्कालीन फ्रांसीसी राष्ट्रपति जैक शिराक ने उस समय भारत को एशिया की उभरती हुई महाशक्ति बताते हुए नजरअंदाज न करने की बात कही थी। यह फ्रांस की दूर दृष्टि ही है कि उसने एशिया की उभरती हुई शक्ति को अपना प्रमुख साझीदार बनाना सुनिश्चित किया है। यह हर भारतीय के लिए गर्व का अवसर हो सकता है जब हमने देखा कि हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी बास्टील डे परेड पर फ्रांस के मुख्य अतिथि थे यही नहीं इस आयोजन में भारत के थल, जल और वायु सेना के जवानों की तीन टुकड़ियों ने मार्च और फ्लाईपास्ट किया। फ्रांस ने भारत को एक कदम आगे बढ़ कर सम्मान दिया और प्रधानमंत्री को फ्रांस का सबसे बड़ा नागरिक व सैन्य अलंकरण "दी ग्रैंड क्रास ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर" प्रदान किया गया।

यूरोप के कंधे पर इस तरह हाथ रखना सहज नहीं था लेकिन दुनिया की चौथी अर्थव्यवस्था नकारी नहीं जा सकती। फ्रांस के साथ हमारे सैन्य समझौतों और खरीददारियों का आरंभ वर्ष 1982 से हुआ जबकि भारत ने मिराज 2000 विमानों का क्रय किया, वर्ष 2005 में छह स्कार्पियन श्रेणी की पनडुब्बियां और फिर वर्ष 2015 में 36 रफाल लड़ाकू विमान खरीदे गए। यह क्रमिकता बनी रहेगी इसकी सुनिश्चितता भी प्रधानमंत्री के 13 व 14 जुलाई 2023 को हुए फ्रांस दौरे में कर ली गई है। इस दौरे में अस्सी हजार करोड़ रूपयों से अधिक के रक्षा उपकरण खरीद के समझौते हुए हैं जिनमें नौसेना के लिए 26 राफेल-मरीन फाइटर जेट्स और तीन स्कॉर्पीन पनडुब्बियों का सौदा प्रमुख है। इतना ही नहीं फ्रांस ने रक्षा अतंरिक्ष एजेंसियों के बीच सहयोग के साथ हेलीकॉप्टर इंजन निर्माण व परमाणु ऊर्जा के लिए छोटे व अत्याधुनिक रिएक्टर बनाने पर सहयोग करने का आश्वासन भी दिया है। कटु सत्य यही है कि आज भारत केवल रूस पर निर्भर नहीं रह सकता, बदलते हुए विश्व में आपको नये नये साथ चुनने ही होंगे। फ्रांस के साथ से हम अपनी उन महत्वाकांक्षाओं जैसे परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह - एनएसजी में शामिल होने के लिए समर्थन प्राप्त करना अथवा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सीट के लिए दावेदारी का समर्थन प्राप्त करना आदि में सफल हो सकते हैं। भारत की विदेशनीति को अब चतुर्दिक सराहा जा रहा है यह बात प्रधानमंत्री की हाल की अमेरिका, फ्रांस और यूएई जैसे देशों की सफल यात्राओं से दिखाई पड़ता है। भारत को यह प्रस्थानविंदु मिला है जहाँ से बहुत आगे जाना है।

सीमा संघोष पत्रिका अपने वैज्ञानिकों को चंद्रयान-3 के सफल लॉन्च की बधाई देती है। यह विश्वास है कि इस बात हमारा रोवर और लैडर सफलता पूर्वक चाँद की धरती को स्पर्श करेगा और इसके साथ ही भारत अंतरिक्ष में एक और महत्वपूर्ण मील का पत्थर स्पर्श कर सकेगा।

आपका ही
राजीव रंजन प्रसाद

प्रधानमंत्री मोदी की फ्रांस यात्रा
सशक्त भारत की नींव

शैलेश कुमार श्रीवास्तव
स्वतंत्र पत्रकार

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने फ्रांस और संयुक्त अरब अमीरात की एक सफल यात्रा की। प्रधानमंत्री की विदेश यात्राओं से एक परिवर्तन देखा जा रहा है अब उनकी विदेश यात्राएं समय की दृष्टि से छोटी हो रही हैं किंतु अब वे एक साथ कई देशों की यात्रा पर जा रहे हैं। हाल में प्रधानमंत्री ने अमेरिका यात्रा के साथ मिस्र की यात्रा की और फ्रांस के साथ संयुक्त अरब अमीरात की यात्रा की।

प्रधानमंत्री की हाल में की गयी फ्रांस यात्रा के कई मायने है, जो भारत को विश्व पटल पर एक शक्तिशाली राष्ट्र की छवि के साथ साथ एक उदारवादी सभ्यता को उल्लेखित करती है। जो मानव कल्याण के लिए अपने राष्ट्र हितों का ध्यान रखते हुए सदैव ही विश्व के साथ खड़ा रह सकता है। प्रधानमंत्री मोदी ने भारत के विकास के साथ साथ विश्व के कल्याण भी चिंता व्यक्त की।

प्रधानमंत्री मोदी का फ्रांस की राजधानी पेरिस में भव्य स्वागत हुआ और उनको फ्रांस का सर्वोच्च नागरिक सम्मान "द ग्रैंड क्रॉस ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर" से भी सम्मानित किया गया जबकि संयुक्त अरब अमीरात में उनको वहां के राष्ट्रपति ने हाथ में फ्रैंडशिप बैंड बांधकर सम्मानित करते हुए भारत और यूएई के मध्य संबंधों के प्रगाढ़ होने का संकेत भी दिया। प्रधानमंत्री के रूप में उनकी यह पांचवीं फ्रांस यात्रा थी। इस बार प्रधानमंत्री फ्रांस की नेशनल परेड के मुख्य अतिथि भी रहे। उन्होंने फ्रांस में भारतीय समुदाय को संबोधित करते हुए कई महत्वपूर्ण बातें कहीं जिनका प्रभाव काफी दूर तक जा रहा है। अपने भाषण में जी–20 की अध्यक्षता व भारत में आयोजित हो रही बैठकों का उल्लेख किया और चंद्रयान–3 की भी चर्चा की।

भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की विदेश यात्राएं नये भारत–सशक्त भारत की एक मजबूत नींव है। उनके नेतृत्व में उभरता नया भारत विकसित एवं विकासशील देशों के बीच सेतु बन रहा

है। इस वर्ष भारत और फ्रांस के बीच राजनीतिक साझेदारी के 25 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं और मोदी की यह फ्रांस यात्रा काफी अहम है। पिछले 25 वर्षों में दोनों देशों के बीच कई द्विपक्षीय समझौते हुए हैं लेकिन इस बार होने वाले समझौतों से दोस्ती के नए युग का आरम्भ माना जा सकता है। भारत की विदेशों में बढ़ती साख को इस यात्रा से एक नई ऊंचाई मिलेगी। राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों ने भारतीय प्रधानमंत्री को फ्रांस के सर्वोच्च सम्मान ग्रैंड क्रॉस ऑफ द लीजन ऑफ ऑनर से सम्मानित किया। मोदी बैस्टिल दिवस परेड में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए, जिसमें फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, फ्रांस की प्रथम महिला ब्रिजेट मैक्रों और अन्य अतिथिगण भी थे। इस परेड के लिए भारतीय नौसेना के जवानों ने भी हिस्सा लिया।

फ्रांस की इस यात्रा के दौरान होने वाले विभिन्न समझौते भारत की रक्षा, प्रौद्योगिकी, तकनीकी एवं सामरिक जरूरतों को पूरा करने में अहम कदम साबित होंगे। व्यापार व उद्योग के साथ–साथ प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में फ्रांस के साथ द्विपक्षीय सहयोग से नई उम्मीदें जागेंगी। इस यात्रा के दौरान किये गये प्रधानमंत्री के प्रयास मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भरता, नये भारत–सशक्त भारत एवं सतत विकास की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होंगे।

फ्रांस एक ऐसा देश है जो हमेशा भारत के साथ खड़ा रहा है। भारतीय सेना को मजबूत करने की बात हो या फिर परमाणु परीक्षण का दौर, वह भारत के साथ कदम से कदम मिलाकर खड़ा दिखाई देता रहा है। वर्ष 1998 में जब भारत ने पोखरण में परमाणु परीक्षण से पूरी दुनिया को चौंका दिया था और उस समय अनेक देशों ने भारत पर प्रतिबंध लगा दिए थे तब फ्रांस के तत्कालीन राष्ट्रपति जैक शिराक ने भारत का साथ दिया और कहा था कि हमें एशिया की

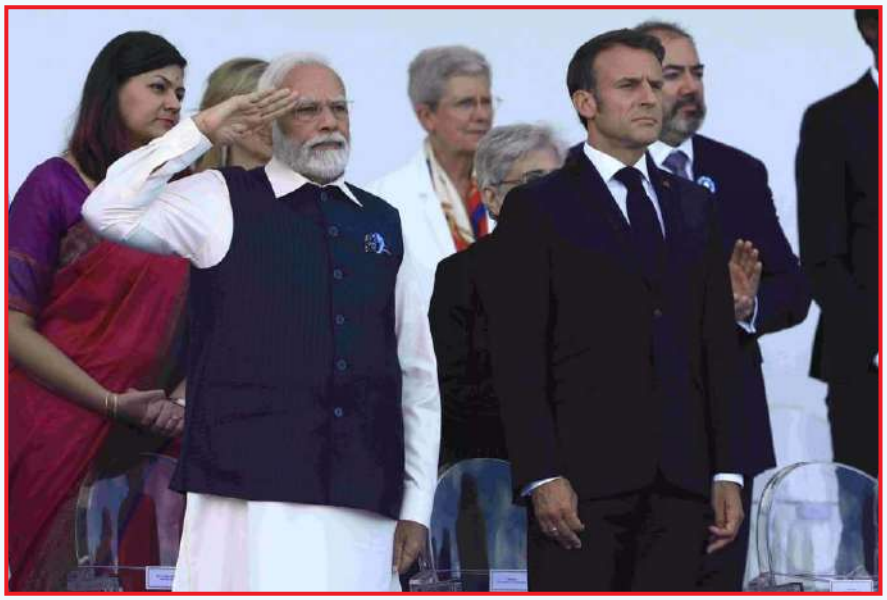

उभरती हुई महाशक्ति को नजरंदाज नहीं करना चाहिए। आज भी एक मित्र की भांति फ्रांस भारत के साथ खड़ा है। फ्रांस के द्वारा भारत को इतना सम्मान एवं महत्व देने के पीछे कई कारण हैं। इनमें भारत की बड़ी होती अर्थव्यवस्था और बड़ा बाजार प्रमुख है। भारत की शांति एवं सद्भाव की नीति है जो दुनिया की महाशक्तियों से संतुलन बनाने में मुख्य आधार है। भले ही भारत फ्रांस से सैन्य सामग्री खरीदने वाला प्रमुख देश है।

इन दिनों रूस और चीन काफी नजदीक आये हैं। रूस के नए विकल्प के तौर पर फ्रांस से बेहतर कोई और देश नहीं हो सकता है जो रक्षा सहयोग तो करता ही है साथ ही तकनीक में भी सहयोग कर रहा है। भारत के लिये रूस की जो जगह है, वह स्थान फ्रांस को देने के लिये भारत को सोचना चाहिए, भारत ऐसा ही सोचेगा यह फ्रांस को आभास है। यही आभास दोनों देशों की मित्रता को प्रगाढ़ करने का बड़ा आधार है। इसी कारण है कि फ्रांस और भारत के संबंधों को कई पहलुओं और कई नजरियों से आंका जा रहा है, उसका विश्लेषण किया जा रहा है।

इतिहास में देखें तो दोनों देशों का आपस में जो तालमेल है, वो दो सभ्यताओं का हो सकता है, दो विचारधाराओं एवं संस्कृतियों का हो सकता है।भारत भी ऐसे देश से दोस्ती बढ़ाना चाहेगा, जो उसके विकास एवं मजबूती का आधार हो। फ्रांस भारत की शांति का पक्षधर रहा है, इसलिये विश्वस्तर पर भारत में पड़ोसी देश द्वारा पोषित आतंकवादी घटनाओं का पुरजोर विरोध करता रहा है, अब तो यह भी लगने लगा है कि फ्रांस ने पश्चिमी दुनिया में भारत के विश्वस्त दोस्त और सहयोगी साझेदार के रूप में रूस की तरह ही फ्रांस भारत के साथ खड़ा दिखाई पड़ता है। भारत और फ्रांस रिश्ते तब और गहरे दिखाई पड़े जब फ्रांस ने संयुक्त राष्ट्र में चीन द्वारा कश्मीर पर बुलाई गई बैठक में भारत के रुख का समर्थन किया था। फ्रांसीसियों ने पहले भी वैश्विक आतंकवादी मसूद अजहर पर संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव का समर्थन किया था। पुलवामा हमले के बाद भारत ने कूटनीति के मोर्चे पर पाकिस्तान एवं चीन को पूरी तरह से अलग–थलग कर दिया था। इसी के कारण पुलवामा हमले की जिम्मेदारी लेने वाले आतंकी संगठन जैश–ए– मोहम्मद के चीफ मसूद अजहर पर प्रतिबंध लगाने के लिए संयुक्त राष्ट्र

की सुरक्षा परिषद में अमेरिका, फ्रांस और ब्रिटेन ने प्रस्ताव पेश किया था। फ्रांस न केवल भारत में आतंकवाद को समाप्त करने में सहयोगी बन रहा है, बल्कि भारत को एक शक्तिसम्पन्न देश बनाने में भी हरसंभव सहयोग कर रहा है।

फ्रांस से हमारी सैन्य शक्ति मजबूत हुई है, वहां से हमें लड़ाकू विमान से लेकर पनडुब्बी तक मिल रही है। मोदी की इस यात्रा के दौरान दोनों देश महत्वपूर्ण रक्षा और व्यापारिक समझौते पर मुहर लगायेंगे। भारतीय नौसेना के लिए फ्रांस के साथ 26 राफेल एम मरीन लड़ाकू विमानों का सौदा होने की उम्मीद है। दुनिया की एक बड़ी ताकत बनते भारत को फ्रांस की मित्रता से अनेक लाभ हैं। भले ही रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की दिशा में पिछले कुछ सालों में भारत ने दूरगामी प्रभाव वाले कदम उठाए हैं, जिसकी वजह से हमारे रक्षा आयात में कुछ कमी जरूर आई है। इसके बावजूद भी ये सच्चाई है कि रक्षा जरूरतों को पूरा करने में बाहरी मुल्कों और विशेषतः फ्रांस पर निर्भरता को पूरी तरह से खत्म करने में भारत को अभी लंबा सफर तय करना पड़ेगा। यह बात फ्रांस भलीभांति जानता है। इसीलिये भारत के इस रक्षा बाजार पर अमेरिका के साथ ही फ्रांस की भी नजर है।

प्रधानमंत्री मोदी की यह फ्रांस यात्रा दुनिया की गैर–जिम्मेदार बड़ी शक्तियों की दादागिरी को समाप्त करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी। भारत दुनिया में ऐसे राष्ट्रों को संगठित करना चाहता है जो युद्ध विरोधी हों। इसी उद्देश्य से भारत, फ्रांस और संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) ने 8 जून को ओमान की खाड़ी में अपना पहला त्रिपक्षीय समुद्री अभ्यास सफलतापूर्वक संपन्न किया। इसमें आईएनएस तरकश, फ्रांसीसी जहाज सुरकौफ, फ्रेंच राफेल विमान और यूएई नौसेना समुद्री गश्ती विमान की भागीदारी थी। इस अभ्यास में सतही

युद्ध जैसे नौसेना संचालन का एक व्यापक स्पेक्ट्रम देखा गया था, जिसमें सतह के लक्ष्यों पर मिसाइल से सामरिक गोलीबारी और अभ्यास, हेलीकोप्टर क्रॉस डेक लैंडिंग संचालन, उन्नत वायु रक्षा अभ्यास और बोर्डिंग संचालन शामिल थे। युद्ध चाहने वाले देशों के लिये अपनी सोच बदलने को विवश करना ऐसे संगठनों एवं सांझें प्रयत्नों से ही संभव होगा। मोदी की यात्रा से ठीक पहले इस तरह के अभ्यास का उद्देश्य तीनों नौसेनाओं के बीच त्रिपक्षीय सहयोग को बढ़ाना और समुद्री वातावरण में पारंपरिक और गैर–पारंपरिक खतरों को दूर करने के उपायों को अपनाने का मार्ग प्रशस्त करना था।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के फ्रांस दौरे पर दुनिया बड़ी गंभीरता से ले रही जो भारत के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। महत्वपूर्ण बात यह है कि फ्रांस संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का प्रभावशाली सदस्य है और उसने अमेरिका की तरह भारत से कभी भी विशुद्ध सौदेबाजी नहीं की। चीन की बढ़ती आक्रामकता एवं विस्तारवादी सोच को रोकने के लिए अमेरीका एवं फ्रांस दोनों देश भारत के करीब लाने का प्रमुख कारण हो सकती है, वही दोनों देशों के भारत प्रशांत क्षेत्र में साझा हित और सौर ऊर्जा तकनीक के प्रसार की संभावनाएं दिखाई पड़ती है। मानव कल्याण लिए युद्ध, हिंसा, साम्प्रदायिक उन्माद एवं आतंकवाद को पोषित करने वाले चीन एवं पाकिस्तान विश्व के लिए बहुत बड़ी चुनौती रूप में हैं। यह इसलिए आवश्यक हो गया है क्योंकि पाकिस्तान जहां आतंकवाद को सहयोग–समर्थन और संरक्षण देने से बाज नहीं आ रहा है, वहीं चीन अपनी विस्तारवादी नीतियों के चलते एशिया ही नहीं, पूरे विश्व के लिए खतरा बन गया है। मोदी और फ्रांस के राष्ट्रपति मैक्रों के बीच होने वाली वार्ताओं से व्यापार और अर्थशास्त्र से लेकर ऊर्जा सुरक्षा, आतंकवाद विरोधी, रक्षा और सुरक्षा सहयोग और भारत–प्रशांत में सहयोग जैसे मुद्दों पर ऐसा सकारात्मक वातावरण बनेगा, जिससे समूची दुनिया शांति, सहयोग, सह–जीवन एवं आतंकवाद मुक्ति प्राप्त कर सकेगी। फ्रांस में हुए हाल की आतंकवादी घटनाओं ने फ्रांस सरकार को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि उनके देश में हुए मुस्लिम दंगों के खिलाफ भारत जैसा देश उनके साथ खड़ा है।

कारगिल विजय दिवस

अंतिम सांस तक लड़ते रहे भारतीय वीर योद्धा

पवन सारस्वत मुकलावा
कृषि एंव स्वतंत्र लेखक
बीकानेर, राजस्थान

भारतीय सेना ने अपने शौर्य से देशवासियों का मान हमेशा बढ़ाया है। उसने दुश्मन की हर चाल नाकाम की है। जब कभी भी देश पर किसी ने बुरी नजर डाली तो उसने ईंट से ईंट बजा दी। इसी तरह भारत के इतिहास के पन्नो में 26 जुलाई की तारीख भी काफी महत्वपूर्ण है। क्योंकि 1971 में हमारी सेना के आगे घुटने टेकने वाले पाकिस्तान को कारगिल युद्ध में भी अपने धोखे की बड़ी कीमत चुकानी पड़ी। भारतीय सेना ने चालबाज पाकिस्तान को अपने पराक्रम से फिर रूबरू करवाया।

भारत की स्वतंत्रता के साथ ही पाकिस्तान का जन्म हुआ। तभी से पाकिस्तान भारत के विरुद्ध अनेक प्रकार के षड्यंत्र रचता रहा हैं। 1947 के विभाजन के बाद से ही पाकिस्तान भारत के लिए सिरदर्द बना हुआ है। वह 1965 और 1971 में भारत पर आक्रमण कर चुका था। 1971 में भारत–पाकिस्तान के बीच युद्ध हुआ, जिसमें भारतीय सेना ने पाकिस्तान सेना के 93,000 सैनिकों का आत्मसमर्पण कराकर ऐतिहासिक विजय हासिल की। इसके फलस्वरूप पाकिस्तान दो हिस्सों में बंट गया जिसमें एक पूर्वी पाकिस्तान (बंगलादेश) बना। तब से लेकर काफी समय तक पाकिस्तान भारत के साथ छद्म युद्ध करता रहा है। प्रत्येक युद्ध में उसकी पराजय हुई हैं। पाकिस्तान निरंतर अपनी शत्रुतापूर्ण मनोवृति का परिचय देता रहा हैं। पाकिस्तान अपनी राजनीतिक, प्रशासकीय एवं आर्थिक कमजोरी को छिपाकर भारत को प्रत्येक दृष्टि से कमजोर बनाना ही पाकिस्तान के राजनेताओं की विकृत मानसिकता का परिचायक है। मई से जुलाई 1999 तक भयानक कारगिल युद्ध इसी मानसिकता का परिणाम था। इस युद्ध में भी पाक को भारत के समक्ष घुटने टेकने पड़े और सारे संसार में उसकी छवि भी फिर पूरी तरह से धूमिल हुई। भारत–पाकिस्तान में रिश्ते ठीक करने और शांति बनाए रखने के लिए भारत के भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी अपने 11 सदस्यों के समूह के साथ 21 फरवरी 1999, को पाकिस्तान के लाहौर गए, जहां दोनों देशों के जननायकों ने लाहौर करार पर हस्ताक्षर कर भारत–पाकिस्तान के बीच व्यापारिक, सांस्कृतिक और धार्मिक रिश्तों को दृढ़ करने की इच्छा व्यक्त की। अप्रैल – मई 1999 को पाकिस्तान सेना के जनरल परवेज मुशर्रफ और आई.एस.आई. चीफ इकतार अहमद भट्ट ने इस समझौते को नकार कर भारत के कारगिल जिले में घुसपैठ कर 'ऑपरेशन बद्र' आरंभ कर दिया।

आम तौर पर कारगिल युद्ध को भी 1947–48 तथा 1965 में पाकिस्तानी सेना द्वारा कबीलाइयों की मदद से कश्मीर पर कब्जा करने की कोशिशों के एक अंग के रूप में देखा जाता है। वास्तव में कारगिल युद्ध कश्मीर हथियाने और भारत को अस्थिर करने के जिहादियों के 20 वर्ष से जारी अभियान का एक महत्वपूर्ण बिंदु है और यह अनेक मामलों में पहले की दोनों लड़ाइयों से भिन्न है। कश्मीर के कारगिल क्षेत्र में सामरिक महत्त्व की ऊँची चोटियाँ भारत के अधिकार क्षेत्र में आती हैं। उन दुर्गम चोटियों पर शीत ऋतु में रहना काफी कष्टसाध्य होता है। इस कारण भारतीय सेना वहाँ शीत ऋतु में नहीं रहती थी। इसका लाभ उठाकर पाकिस्तान ने 1999

में आतंकवादियों के साथ पाकिस्तानी सेना को भी कारगिल पर कब्जा करने के लिए भेज दिया। शिमला समझौते के तहत वस्तुतः पाकिस्तान ने सीमा सम्बन्धी नियमों का उल्लघंन किया था। लेकिन उसके पास यह सुरक्षित बहाना था कि कारगिल की चोटियों पर तो आतंकवादियों ने कब्जा किया है, न कि पाकिस्तान की सेना ने। ऐसी स्थिति में भारतीय सेना के सामने बड़ी चुनौती थी। दुश्मन काफी ऊँचाई पर था और भारतीय सेना उनके आसान निशाने पर थी। लेकिन भारतीय सेना ने अपना मनोबल कायम रखते हुए पाकिस्तानी फौज पर आक्रमण कर डट कर मुकाबला किया।

3 मई 1999 में एक लोकल ग्वाले से मिली सूचना के बाद बटालिक सेक्टर में ले. सौरभ कालिया के पेट्रोल पर हमले ने उस इलाके में घुसपैठियों की मौजूदगी का पता लगा दिया था। 8 से 15 मई, 1999 की अवधि के दौरान कारगिल पर्वतमाला के ऊपर भारतीय सेना के गश्ती दल द्वारा घुसपैठियों का पता लगा लिया गया था। कारगिल और द्रास के सामान्य इलाकों में, पाकिस्तान ने सीमा पार से तोपों से गोलीबारी का सहारा लिया। भारतीय सेना द्वारा कुछ ऑपरेशन शुरू किए गए जो द्रास सेक्टर में घुसपैठियों को काटने में सफल रहे। साथ ही बटालिक सेक्टर में घुसपैठियों को पीछे धकेल दिया गया। शुरू में भारतीय सेना ने इन घुसपैठियों को जिहादी समझा और उन्हें खदेड़ने के लिए कम संख्या में अपने सैनिक भेजे, लेकिन प्रतिद्वंद्वियों की ओर से हुए जवाबी हमले और एक के बाद एक कई इलाकों में घुसपैठियों के मौजूद होने की खबर के बाद भारतीय सेना को समझने में देर नहीं लगी कि असल में यह एक योजनाबद्ध ढंग से और बड़े स्तर पर की गई घुसपैठ है, जिसमें केवल जिहादी नहीं, पाकिस्तानी सेना भी शामिल है। यह समझ में आते ही भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन विजय' शुरू किया, जिसमें 30,000 भारतीय सैनिक शामिल थे।

15 मई, 1999 को भारतीय सेना ने पांच–पांच फौजियों की टुकडियां बनाईं, जिसको घुसपैठियों की जांच एवं जिले की पैट्रोलिंग के लिए भेजा, परन्तु घुसपैठ करके बैठे दुश्मन ने अचानक पैट्रोलिंग पार्टी पर हमला कर दिया जिससे वे सभी शहीद हो गए। घुसपैठियों ने 19 मई, 1999 को कारगिल जिले पर हमला किया, जिसका मुख्य निशाना भारतीय सेना का शस्त्रागार था।

पाकिस्तानी सेना ने कारगिल जिले में भारतीय सेना की 140 पोस्टों पर नाजायज कब्जा किया और करीब 2500 जवान तैनात किए। भारतीय सेना ने 19 मई, 1999 को ऑपरेशन विजय की शुरूआत कर दी थी। 20 मई को भारतीय सेना की गोरखा रैजीमैंट, राजपूत रैजीमैंट और 18 ग्रेनेडियर्स को कारगिल जिले के द्रास सैक्टर भेजा गया। द्रास सैक्टर में तोलोलिन प्वाइंट, प्वाइंट 4590, प्वाइंट 5140, प्वाइंट 5410 नामक पहाडियों पर भारतीय तिरंगा लहराने के बाद कारगिल की शान कही जाने वाली टाइगर हिल चोटी पर चढ़ाई कर दी। कारगिल का ताज कही जाने वाली टाइगर हिल 18,000 फुट की ऊंचाई पर है, जहां भारतीय सेना ने कैप्टन विक्रम बत्रा के नेतृत्व में 22 मई को तीन विभिन्न स्थानों से धावा बोला। इस हमले से पाकिस्तान सेना को काफी क्षति पहुंची, परन्तु कैप्टन विक्रम बत्रा वीरगति को प्राप्त हुए। भारत सेना ने अपने प्लान में कुछ बदलाव लाकर टाइगर हिल के चारों और से सैनिक भेजे। टाइगर हिल को हासिल करने के लिए भारत की बोफोर्स तोप ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। टाइगर हिल पर भारतीय सेना की ओर से अंतिम प्रहार 3 जुलाई, 1999 को शाम 5.15 बजे जवानों ने बोफोर्स तोपों के साथ किया। इस घातक हमले से भयभीत होकर पाक सेना भारतीय जमीन को छोड़कर भाग गई। बोफोर्स ने पाकिस्तानियों को संभलने का मौका भी नहीं दिया। अंततः भारतीयों ने टाइगर हिल हो वापस मुक्त करा लिया।

7 जुलाई, 1999 को, मशकोह घाटी पर पुनः कब्जा कर लिया गया। द्रास और मशकोह उप–क्षेत्रों में गनर्स के आश्चर्यजनक प्रदर्शन के सम्मान में प्वाइंट 4875 को 'गन हिल' के रूप में फिर नामित किया गया था। बटालिक सेक्टर का इलाका बहुत कठिन था और

दुश्मन कहीं ज्यादा मजबूती से घुसा हुआ था। नियंत्रण की लड़ाई में लगभग एक महीना लग गया। हावी ऊंचाइयों पर आर्टिलरी ऑब्जर्वेशन पोस्ट (ओपी) स्थापित किए गए थे और तोप के गोले दिन–रात दुश्मन पर लगातार गिराये गये थे। 21 जून 1999 को प्वाइंट 5203 पर पुनः कब्जा कर लिया गया और 6 जुलाई 1999 को खालूबर को भी पुनः प्राप्त कर लिया गया।

भारतीय नौसेना के पूर्वी एवं पश्चिमी नेवल कमांडर्स ने मई, 1999 को 'ऑपरेशन तलवार' की शुरूआत की। हमले का मुख्य उद्देश्य पाकिस्तान के उन तटों को खत्म करना था, जिनसे वह व्यापार एवं तेल का आदान प्रदान करता था। युद्ध के समय पाकिस्तान के प्रधानमंत्री रहे नवाज शरीफ के अनुसार, भारतीय नौसेना के हमले के बाद पाकिस्तान के पास सिर्फ 6 दिन की सामग्री एवं गोला–बारूद ही बचा था। पाकिस्तान के सभी नेवल ब्लाक कर दिए। इस प्रकार पाकिस्तान के पास अब सरेंडर करने के अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं था।

कारगिल युद्ध में और ऊंचाई पर छुपकर बैठे पाकिस्तान को खत्म करने के लिए भारतीय थलसेना की सहायता के लिए भारतीय वायुसेना ने 26 मई, 1999 को सफेद सागर नामक ऑपरेशन चलाया। वायु सेना के ऑपरेशन सफेद सागर को बहुत नुकसान झेलना पड़ा। लगभग 16 से 18 हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित घाटियों की पेट्रोलिंग करना थोड़ा मुश्किल था। ऐसे में उड़ान भरने के लिए विमानों को करीब 20,000 फीट की ऊंचाई पर उड़ना पड़ता है। ऐसी ऊंचाई पर हवा का घनत्व 30 प्रतिशत से कम होता है। इन हालात में पायलट का दम विमान के अंदर ही घुट सकता है और विमान दुर्घटनाग्रस्त हो सकता है। ऐसी हालत में सेना डटी रही। भारत ने कारगिल की लड़ाई में चार MI–17 हेलिकोप्टरों को खो दिया। भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तानी सैनिकों के खिलाफ कारगिल युद्ध में मिग–27 और मिग–29 का प्रयोग किया था। मिग–27 की मदद से इस युद्ध में उन स्थानों पर बम गिराए जहां पाक सैनिकों ने कब्जा जमा लिया था। इसके अलावा मिग–29 करगिल में बेहद महत्वपूर्ण साबित हुआ इस विमान से पाक के कई ठिकानों पर आर–77 मिसाइलें दागी गईं थीं। युद्ध को निर्णायक दिशा भारतीय वायुसेना के विमान मिराज–2000 ने दी। जब मिराज–2000 आया तब पाकिस्तानियों को खदेड़ कर रख दिया। मिराज–2000 विमान के लेजर पिन पॉइंट टारगेट के साथ गाइडिड मिसाइलों के सामने पाकिस्तानी सेना टिक नहीं सकी और भारतीय पोस्टों को छोड़कर भाग निकली। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय

थलसेना ने सम्पूर्ण कारगिल जिले पर कब्जा कर लिया। भारतीय सैनिकों ने ठान लिया था कि वे कारगिल से पाकिस्तानियों को खदेड़कर ही दम लेंगे। भारतीय सैनिकों ने विलक्षण वीरता का परिचय देते हुए पाकिस्तानी सैनिकों को चारों ओर से घेर लिया। भारत ने पाक को 17 जुलाई तक अपने घुसपैठिए वापस बुलाने की चुनौती देकर अपनी सामरिक कार्यवाही जारी रखी। इसी बीच युद्ध में अपनी पराजय देखकर पाकिस्तानी प्रधानमंत्री नवाज शरीफ अमरीका गए तथा तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन से सहायता मांगी किन्तु खाली हाथ लौटना पड़ा। फिर बयान जारी कर घुसपैठियों की वापसी व नियंत्रण रेखा का सम्मान करने की घोषणा की। इसके बाद भी मश्कोह, द्रास और कारगिल में घुसपैठियों की स्थिति बनी रही, जिन्हें भारतीय सेना ने जुलाई के अंतिम सप्ताह तक मौत की नींद सुला दिया और नियंत्रण रेखा के पार भागने पर विवश कर दिया। पाकिस्तान को सामरिक महत्त्व की चोटियाँ खाली करनी पडीं। भारत ने पाकिस्तानी सैनिकों की जिन्दा वापसी को स्वीकार कर लिया। वस्तुतः युद्ध के भी कुछ नियम होते हैं। भारतवर्ष ने उन्हीं नियमों का पालन किया था। भारतीय सेनाओं द्वारा कारगिल युद्ध में सम्पूर्ण विजय 26 जुलाई को घोषित की गई। यह ऑपरेशन आठ मई को शुरू हुआ और 26 जुलाई को खत्म हुआ, जिसमे सेना के 527 जवान शहीद हुए और करीब 1363 जवान घायल हुए। इतने बलिदानों के बाद भारतीय सेना ने कारगिल में तिरंगा फहराया था, तब से हर साल इस दिन 'कारगिल विजय दिवस' के तौर पर मनाया जाता है।

मातृभूमि की रक्षा के प्रति प्रतिबद्धता, अदम्य साहस, रण कौशल और जान हथेली पर रख करने वाले बहादुरों के दम पर लगभग 2 माह के छद्म युद्ध में ही भारत ने पाक को अपमानजनक पराजय का मुंह देखने के लिए विवश करते हुए अपनी एक 1–1 इंच भूमि पुनः प्राप्त कर ली थी। कारगिल युद्ध में भारतीय सैनिकों की बहादुरी, रोमांचकारी, विसमय्कारी, हरियद्रावक बेमिसाल है। वर्ष भर बर्फ में ढकी ऊंची पहाड़ियों पर इतने लंबे समय तक लड़े गए विश्व के इस प्रथम युद्ध में वीरों ने बर्फ में रहकर, भूखे प्यासे रहकर, घंटों रेंगते हुए आगे बढ़कर, गोलियों से सीना छलनी होने पर भी दुश्मन से निरंतर लोहा लिया तथा कहीं–कहीं घुसपैठियों को मौत के घाट उतारकर ही प्राण त्यागे। अभूतपूर्व साहस का परिचय देने वाले तथा अपने वतन के लिए शहीद हो जाने वाले इन सैनिकों की शौर्य गाथा पूरे विश्व के सैनिकों के लिए सदैव प्रेरणा स्त्रोत बनी रहेगी।

धर्मांतरित आदिवासियों का विरोध "डीलिस्टिंग"

हनुमान चौहान
आई टी क्षेत्र में कार्यरत

डीलिस्टिंग" के पोस्टरो से पटा शहर और जनजाति सुरक्षा मंच की झांकियों से सजा शहर। ऐसा ही नजारा आपको अधिकांशतः हर राज्य में देखने को मिला होगा जहाँ जहाँ जनजाति सुरक्षा मंच द्वारा रैलियां आयोजित की गयी। "डी–लिस्टिंग" के विषय से अनजान हिंदू समाज परंतु समाज के लिये यह अत्यंत ज्वलंत विषय। ऐसे ही विषय को समझने के लिये "डीलिस्टिंग" की एक रैली में जाने का अवसर मिला। जनसभा के मैंदान में सिर्फ एक ही नारा गूंज रहा था। "जनजाति सुरक्षा मंच का एक ही नारा–"डीलिस्टिंग, डीलिस्टिंग, डीलिस्टिंग"।

रैली के परिपेक्ष्य में डीलिस्टिंग शब्द का आशय बड़ा ही सरल है – " जनजाति समुदाय का व्यक्ति, जिसने अपना धर्म परिवर्तन कर लिया हो। अर्थात् – इस्लाम या ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया हो, उसे जनजाति समुदाय की सूची से बाहर करना अथवा जनजाति के लिये उसे अयोग्य ठहराना। लोक भाषा मैं उसे जात से बाहर निकाल देना भी कहते है ।"

जनजाती समुदाय अपनी मूल–धार्मिक, परम्परागत संस्कृति के लिये जाना जाता है। 2011 जनगणना के अनुसार जनजाति समुदाय की जनसंख्या लगभग 10.42 करोड़ है। एक अनुमान के अनुसार लगभग 2 करोड़ लोग इस्लाम या ईसाई धर्म में धर्मांतरित हो चुके है। ऐसे ही लगभग 70 प्रतिशत धर्मांतरित लोग संवैधानिक रूप से जनजातीय समाज के उत्थान के लिये चलायी जा रही योजनाओं का लाभ ले रहे है। जबकी मूल जनजातिय समाज की लगभग 80 प्रतिशत आबादी आज भी वंचित है तथा शोषित की तरह दो जून की रोटी और सम्मानपूर्ण जीवन के लिये संघर्षरत है। लोकसभा में 24 नवम्बर 1970 का दिन जनजातीय समाज के लिये ऐतिहासिक दिन था। 322 लोकसभा सांसदों और 26 राज्यसभा सांसदों के समर्थन से जनजाति आदेश विधेयक 1967 संसद मे लाया गया। उस समय लोहदरगा (बिहार) से आने वाले सांसद डा. कार्तिक उराव ने बिल पर चर्चा करते हुए कहा कि "जिन्होंने ईसाई धर्म ग्रहण किया है, उनको (एस.टी.) मे सूचीबद्ध नही किया गया है और ना ही (एस.टी.) में सूचीबद्ध नही किया जा सकता है। "यह विधेयक ही "डीलिस्टिंग" के आंदोलन का बीजरोपण था। यह विधेयक कानूनी जामा नहीं पहन पाया और राजनीति का शिकार हो गया। डा. कार्तिक उराव ने अपनी पुस्तक "बीस वर्ष की काली रात" मे भी इस असंवैधानिक, वैधानिक प्रावधानों का उल्लेख किया है। डा. कार्तिक उराव के अनुसार डीलिस्टिंग नही किया जाना चाहिए। धर्म परिवर्तन करने वाले लोगों को जनजाति (एस.टी.) की परिभाषा से बाहर नही किया जाना चाहिए। यह मूल जनजातीय समाज के साथ अन्याय है। क्योंकि धर्मांतरित लोग कुल अनुसुचित जनजातियों का लगभग 60 प्रतिशत से अधिक नौकरियों, छात्रवृती और अनुदान हड़प रहे है। वस्तुतः डीलिस्टिंग के इस अभियान में संविधान के अनुचछेद 342 में संशोधन वैसा ही किया जाना है जैसा कि अनुच्छेद 341 में है। अर्थात् एस.टी के मानक में एस.सी. की भांति धर्म परिवर्तन करने वालों को बाहर किया जा सके। इस्लाम या ईसाई धर्म स्वीकार करने के पश्चात इन्हें अल्पसंख्यकों का कानूनी दर्जा भी प्राप्त हो जाता है, जिसके पश्चात अल्पसंख्यकों व जनजातीय समाज, दोनों के लिये चलायी जा रही योजनाओं का लाभ उठाकर दोहरा लाभ प्राप्त करते है। इस प्रकार के प्रलोभन देकर भी उन्हें धर्मांतरण के लिये प्रेरित किया जाता है। अंत मे "समस्याए अनेक, समाधन एक – "डीलिस्टिंग"।

प्रधानमंत्री जी की अमेरिका यात्रा में हुए रक्षा सौदे

देवेन्द्र पुरोहित
व्यवसायी और स्वतंत्र लेखक

भारत हमेशा से शांति का पक्षधर रहा है!" प्रधानमंत्री जी की इस बात के पीछे एक बहुत बड़ी सोच है हम यह जानते हैं कि अहिंसा परमो धर्म : धर्म हिंसा तथैव चः। अर्थात् यह है कि हम शांति के पक्ष में हैं लेकिन कई बार शांति को स्थापित करने के लिए कड़े कदम उठाने पड़ते हैं और उन कड़े कदमों को उठाने के लिए सक्षम होना पड़ता है जिसके लिए राजनीतिक, आर्थिक, सामरिक, वैश्विक कूटनीक रूप से सक्षम होना जरूरी हैं।

हमारी परंपरा भी यह संकेत करती है कि जो शक्तिशाली है उसी के सभी मित्र हैं। वर्तमान में भारत इसका सटीक उदाहरण है क्योंकि भारत सक्षम भी है, सामर्थ्यवान भी है और शक्तिशाली भी है। इसलिए भारत में अपार संभावनाएं भी लोगों को दिख रही है इन्हीं सकारात्मकता के कारण विश्व के शक्तिशाली देश भारत की ओर देख रहे है। इसका एक कारण यह भी है कि भारत के वेद जहाँ यह कहते है कि हमें अपराजेय चारित्रिक, मानसिक और आत्मिक बल का संचय करना चाहिए और कूटनीति राजनीति से ही परिस्थितियों का सामना करना चाहिए वहीं यह भी कहा गया है कि "कृते प्रतिकृतिं कुर्याद्विंसिते प्रतिहिंसितम्। तत्र दोषं न पश्यामि शठे शाठ्यं समाचरेत् "।। जो आपके साथ जैसा बर्ताव करें उसके साथ वैसा ही करिए, हिंसा करने वालों के साथ हिंसक रूप में ही आचरण करें। जिसके लिए राजनीतिक आर्थिक सामरिक वैश्विक कुटनीक रूप से सक्षम होना जरूरी हैं। भारत इस और बहुत ही तीव्र गति से कार्य कर रहा है उसी के तहत भारत रक्षा के क्षेत्र में दिन प्रतिदिन नए–नए आयामों को जोड़ता जा रहा है हाल ही में भारतीय प्रधानमंत्री जी की अमेरिका यात्रा इस लिहाज से अत्यधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमे भविष्य को देखते हुए अत्यधिक महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए है। जिसमे रक्षा के क्षेत्र मे हम बात करे तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की इस यात्रा के दौरान भारत और अमेरिका के बीच सबसे अहम सौदा रक्षा क्षेत्र में हुआ। अमेरिकी कंपनी जनरल इलेक्ट्रिक (जीई) और हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल) के बीच समझौता ज्ञापन (एमओए) हो गया है। इससे रक्षा क्षेत्र में बहु प्रतीक्षित विकास होगा। इस समझौते से अमेरिका से सबसे आधुनिक जेट इंजन तकनीक भारत को मिल सकेगी। जेट इंजन एफ 414 के संयुक्त निर्माण से दोनों देशों को फायदा होगा। इस डील के तहत भारत को कम से कम 11 अहम तकनीक ट्रांसफर किए जाने की संभावना है।

भारत के लिहाज से ये सबसे ज्यादा अहम है क्योंकि इसके साथ ही भारत के साथ तकनीक साझा नहीं करने वाले दौर का अंत होने की शुरुआत हो गई है।

बीते सालों में भारत को उभरती हुई अहम तकनीकें हासिल करने से वंचित रखा गया था। साल 1960 से 1990 के दौर में भारत के प्रति इस रुख में काफी सख्ती आई थी।

साल 1974 में हुए भारत के पहले परमाणु परीक्षण के बाद न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप का गठन किया गया, जिससे भारत को बाहर रखा गया।

इसके बाद 1998 के परमाणु परीक्षण के बाद अटल बिहारी वाजपेयी को अमेरिका के नेतृत्व में दुनिया भर की आलोचना का सामना करना पड़ा। हालांकि, तत्कालीन भारतीय विदेश मंत्री जसवंत सिंह और अमेरिकी उप–विदेश मंत्री स्टॉब टेलबॉट के बीच साल 2000 के जनवरी में एक अहम बैठक हुई। इसके बाद साल 2000 के ही मार्च महीने में अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने भारत का दौरा किया जिसके बाद से भारत और अमेरिकी रिश्ते धीरे–धीरे

मजबूत और परिपक्व हुए हैं।

क्लिंटन के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति बनने वाले जॉर्ज डब्ल्यू बुश के कार्यकाल में भारत और अमेरिका के बीच परमाणु समझौता हुआ, जिसने दोनों देशों के बीच रिश्तों को रणनीतिक स्तर पर मजबूती दी। साल 2008 के सितंबर महीने में न्यूक्लियर सप्लायर ग्रुप की ओर से भारत–अमेरिका परमाणु समझौते को स्वीकृति दिए जाने के बाद भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा था, 'इस समझौते ने भारत के परमाणु ऊर्जा से जुड़ी तकनीकों की मुख्य धारा से अलग–थलग रहने और तकनीक से वंचित रखने के दौर का अंत है।"

साल 2016 में पीएम मोदी ने अमेरिकी संसद में कहा था कि भारत और अमेरिका ने ऐतिहासिक हिचकिचाहट से पार पा लिया है। इसके साथ ही उन्होंने आर्थिक और सुरक्षा से जुड़े समझौतों को मजबूत करने की अपील की। इसके छह साल बाद जेट इंजन और अहम तकनीकों को साझा करने के लिए हुआ समझौता तकनीक साझा करने से वंचित रखने के दौर का अंत और इतिहास की हिचकिचाहटों से पार पाने की शुरुआत है।

अमेरिका की कंप्यूटर मेमोरी चिप विनिर्माता माइक्रोन टेक्नोलॉजी एक बड़ा निवेश कर रही है। यह कंपनी गुजरात में अपना सेमीकंडक्टर असेंबली एवं परीक्षण संयंत्र लगाएगी, जिसपर कुल 2.75 अरब डॉलर (22,540 करोड़ रुपये) का निवेश होगा। दोनों नेताओं ने भारत में सेमीकंडक्टर शिक्षा और कार्यबल के विकास में तेजी लाने के लिए 60,000 भारतीय इंजीनियरों को प्रशिक्षित करने के लैम रिसर्च के प्रस्ताव का स्वागत किया। उन्होंने एक सहयोगी इंजीनियरिंग केंद्र स्थापित करने के लिए 40 करोड़ अमेरिकी डॉलर का निवेश करने के लिए एप्लाइड मैटेरियल्स इंक की घोषणा का भी स्वागत किया।

इस यात्रा में दूसरी खास बात यह हुई कि भारत ने अमेरिका से 31 प्रिडेटर ड्रोन (Predator Drone Deal India) खरीदने का सौदा किया। 3 अरब डॉलर की यह सौदा भारत–अमेरिका के बीच 2011 के बाद का सबसे बड़ा रक्षा सौदा है। इसके तहत अमेरिका से डफ 9 ड्रोन (MQ 9 drone) खरीदे जाएंगे। अमेरिकी कंपनी जनरल एटॉमिक्स डफ 9 ड्रोन बनाती है। इस तरह के ड्रोन का दुनिया में बड़ा खौफ है। चीन के पास भी इस तरह के ड्रोन नहीं हैं।

भारत और अमेरिका 2024 में एक भारतीय अंतरिक्ष यात्री को अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS) पर भेजने के लिए सहयोग कर रहे हैं। भारत ने आर्टेमिस समझौते में शामिल होने का भी फैसला किया है, जो समान विचारधारा वाले देशों को नागरिक अंतरिक्ष अन्वेषण पर जोड़ता है, और NASA और ISRO 2024 में ISS के लिए एक संयुक्त मिशन पर सहमत हुए हैं।

1967 की बाहरी अंतरिक्ष संधि (OST) में दरकिनार कर दिया गया आर्टेमिस समझौता ऐसे सिद्धांतों का गैर–बाध्यकारी सेट है, जिसे 21वीं सदी में नागरिक अंतरिक्ष अन्वेषण को निर्देशित करने और इस्तेमाल करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह 2025 तक मनुष्यों को चंद्रमा पर लौटा लाने का अमेरिकी नेतृत्व वाला मिशन है, जिसका अंतिम लक्ष्य मंगल और उससे आगे अंतरिक्ष अन्वेषण का विस्तार करना है।

बदलते भूरणनीतिक हालात में रूस और चीन एक दूसरे के करीब आ रहे हैं। ऐसे में पश्चिमी देशों के केवल यूरोप और अमेरिका तक सीमित रहना समस्या बन सकता है। वहीं मध्यपूर्व एशिया में भी अमेरिकी रुतबा कम होता जा रहा है ऐसे में अमेरिका को एशिया में तगड़े साझेदारों की जरूरत है और हालात उसे भारत के करीब आने को मजबूर कर रहे हैं। ऐसे मे अमेरिका पर सभी की निगाहें है।

पीएम मोदी की यात्रा का प्रमुख जोर द्विपक्षीय व्यापारिक संबंधों पर रहा. इसमें कोई शक नहीं कि अमेरिका को भारत के प्रति अपना नजरिया बदलना ही होगा। लेकिन वह भारत के साथ संबंध विश्वसनीय बनाने में कितना समय लगाता है यह देखने वाली बात होगी। अमेरिका भारत के साथ रक्षा सौदों के साथ इसकी शुरुआत कर सकता है। लेकिन द्विपक्षीय व्यापार हमेशा ही भारत अमेरिका के संबंधों पर शीर्ष मुद्दा रहेंगे इससे इनकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि भारत की आबादी 140 करोड़ है। दुनिया की नजरों में ये एक बड़ा बाजार है। हर कोई अपना सामान भारत में बेचना चाहता है। इतना ही नहीं, भारत में मिडिल क्लास बढ़ रहा है। उसकी खर्च करने की क्षमता भी बढ़ रही है। अमेरिका की नजर भी भारत के इस बाजार पर है. यही वजह है कि प्रधानमंत्री मोदी के अमेरिकी दौरे के दौरान ही दोनों देशों के बीच चल रहे छह अलग–अलग व्यापारिक मुद्दों को सुलझा लिया गया है, जिसमें टैरिफ का मुद्दा भी शामिल है। इसके अलावा, 2022–23 में अमेरिका, भारत का सबसे बड़ा ट्रेडिंग पार्टनर रहा। दोनों देशों के बीच 10 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा का कारोबार हुआ। अमेरिका के साथ कारोबार करने में सिर्फ उसकी ही नहीं, बल्कि भारत की भी भलाई है। क्योंकि अमेरिका के साथ कारोबार करने में भारत का ट्रेड बैलेंस पॉजिटिव रहता है. वो इसलिए क्योंकि भारत, अमेरिका को बेचता ज्यादा है और वहां से खरीदता कम है!.

पीएम मोदी की ये यात्रा इसलिए भी खास रही, क्योंकि ये बताती है कि खट्टे–मीठे रहे भारत–अमेरिका के रिश्तों में अब बदलाव आ रहा है। दोनों के रिश्ते पहले से कहीं ज्यादा गहरे हुए हैं। पीएम मोदी की ये यात्रा इसलिए भी खास रही, क्योंकि इस पर दुनियाभर की नजरें टिकी थीं। इस यात्रा से सबसे ज्यादा मिर्ची चीन को लगी। उसने तो साफ–साफ कह दिया कि चीन का मुकाबला करने के लिए अमेरिका, भारत से दोस्ती बढ़ा रहा है।

सीमांत पर्यटन : देश से जुड़ती सीमाएं

आचार्य अनामय (डॉ. राहुल मिश्र)
(अध्यक्ष, हिंदी विभाग केंद्रीय बौद्ध विद्या संस्थान
(सम विश्वविद्यालय) लेह)

हाल ही में जम्मू–कश्मीर राज्य प्रशासन द्वारा समृद्ध सीमा योजना के अंतर्गत सीमांत पर्यटन के लिए बजट के प्रावधान के साथ ही विगत वर्ष से चल रही सीमांत पर्यटन योजना के विस्तार को नया आयाम दिया गया है। यह जानना आवश्यक होगा कि जम्मू–कश्मीर राज्य भारतदेश का ऐसा सीमावर्ती प्रदेश है जिसकी अंतरराष्ट्रीय सीमाएँ सबसे अधिक चर्चा में रहती हैं। भारत देश की सीमाएँ बहुत विस्तृत हैं और साथ ही अनेक विविधताएँ भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में देखी जा सकती हैं। ये विविधताएँ संस्कृति से लगाकर भौगौलिक, सामाजिक और भू–राजनीतिक हैं। इन सभी विविधताओं की बानगी जम्मू–कश्मीर राज्य में देखी जा सकती है। इन विविधताओं के साथ ही जम्मू–कश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्रों में वर्ष भर अराजकता और आतंक का साया मँडराता रहता है।

आए दिन के समाचार एक ऐसी धारणा आमजन के मन में बना देते हैं, कि उसमें भय के अतिरिक्त कुछ भी सोचने और जानने के लिए शेष नहीं रह जाता है।वर्ष 2019 में जम्मू–कश्मीर के केंद्रशासित प्रदेश बनने के बाद स्थितियाँ बदली हैं। लद्दाख केंद्रशासित प्रदेश के रूप में अलग से अस्तित्व में आया है। इन बदली हुई स्थितियों का एक बड़ा, प्रभावी और सशक्त पक्ष सीमांत पर्यटन योजना के रूप में देखा जा सकता है। यद्यपि 'बार्डर टूरिज्म योजना' केवल जम्मू–कश्मीर के लिए ही नहीं है। यह योजना लद्दाख में भी है, उत्तराखंड और देश के अन्य सीमावर्ती राज्यों के सीमांत क्षेत्रों के लिए भी है।

लेकिन इस योजना के सबसे महत्त्वपूर्ण और प्रभावी पक्ष को, इसके सर्वाधिक सकारात्मक प्रभाव को जम्मू–कश्मीर राज्य में विशेष रूप से देखा जा सकता है, इस कारण जम्मू–कश्मीर के सीमांत पर्यटन से बात को प्रारंभ करना प्रासंगिक और समीचीन लगता है। देश के अन्य भागों में रहने वाले नागरिकों के लिए सीमांतक्षेत्र का जीवन एक रहस्यमयी दुनिया जैसा ही है। वे अपने देश की सीमाओं को भले ही मानचित्र में पहचान लें, लेकिन उनके लिए सीमांतक्षेत्र के लोगों के जीवन, वहाँ की संस्कृति, सामाजिक संरचना और भौतिक स्थिति के साथ ही प्राकृतिक विशिष्टता को जानना–समझना सरल नहीं। लंबे समय तक सुरक्षा कारणों से, राजनीतिक कारणों से, साथ ही अंतरराष्ट्रीय नीतियों, पड़ोसियों के साथ संबंधों आदि के कारण ये सीमांतक्षेत्र मुख्यधारा के अंग नहीं बन सके। जैसा कि कहा जाता है कि परिधि सदैव केंद्र से दूर रहती है, वैसे ही हमारे देश की सीमाओं में बसने वाले लोग केंद्र से दूर रहे। यह सुखद है, यह अभूतपूर्व भी है, कि गणितीय विधान को भारतीयता और राष्ट्रीयता के उदात्त भावों की भूमि पर सरल किया गया है। आज केंद्र परिधि के निकट है। आज दिल्ली अपने आसपास का ही नहीं सोच रही, वरन् परिधि तक जा रही है। देश अपनी सीमाओं को जान रहा है, अपने सीमांत क्षेत्र के भारतीयों को, नागरिकों को जान रहा है, उनके साथ खड़ा है।

इसी ध्येय को लेकर विगत वर्ष केंद्र सरकार की 'बार्डर टूरिज्म योजना' अस्तित्व में आई थी और बहुत कम अंतराल में ही इस योजना के सकारात्मक पक्ष न केवल सामने हैं वरन् राष्ट्र के गौरव की श्रीवृद्धि भी कर रहे हैं, भारतीयता की अलख भी जगा रहे हैं। इस वर्ष बदरीनाथ–केदारनाथ जी की यात्रा के साथ एक स्थान की यात्रा भी बहुत चर्चित रही। कह सकते हैं कि जितने यात्री केदारनाथ धाम की यात्रा पर गए, लगभग सभी तीर्थयात्री भारत के सीमावर्ती अंतिम गाँव माणा तक भी गए।

पहले यहाँ एक 'साइन बोर्ड' लगा होता था– भारत का आखिरी गाँव... माणा। इसी वर्ष मई माह में बड़ी अनूठी पहल करते हुए उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने वह 'साइन बोर्ड' बदलवा दिया। अब उस 'साइन बोर्ड' में 'भारत का आखिरी गाँव– माणा' के स्थान पर 'भारत का पहला गाँव– माणा' लिखा है। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री की यह पहल, उनका यह कार्य है तो बहुत सामान्य–सा, लेकिन इसके निहितार्थ को समझकर देखिए....।

इस बदलाव को माणा गाँव के रहवासियों की दृष्टि से जानकर तो देखिए....। आपको बहुत अच्छा लगेगा, गर्व की अनुभूति होगी। जो लोग अपने को आखिरी पायदान पर मानकर हीनबोध से ग्रस्त हो जाते रहे होंगे, उन्हें एक छोटे–से बदलाव ने पहली पंक्ति पर ला दिया, अग्रिम स्थान दे दिया। यह सच भी है, कि सीमा पर माणा गाँव है, तो वह स्वाभाविक रूप से पहला ही होगा..., लेकिन अंतर केवल सोच में था, जिसे बदला गया है। देवभूमि उत्तराखंड में भारत का पहला गाँव– माणा अब तीर्थयात्रियों की पहली पसंद भी है। बदरीनाथ धाम से मात्र 3 किमी की दूरी पर माणा गाँव के किसी छोर में एक चाय की छोटी–सी दुकान भी है। उस दुकान में एक कप चाय पीना और फोटो खींचकर या सेल्फी लेकर उसे बड़े गर्व के साथ सोशल नेटवर्किंग के पटल पर, फेसबुक, इंस्टाग्राम आदि पर डाल देना किसी 'पैशन' से कम नहीं... किसी जोश से कम नहीं। इस वर्ष ये चित्र खूब देखे गए। लोगों के लिए बदरी–केदार की तीर्थयात्रा इस दृष्टि से देशाटन से कम नहीं ठहरती, भगवद् भक्ति के साथ देशभक्ति, देशानुराग का यह दुर्लभ संयोग देवभूमि में साकार हुआ है। माणा गाँव आज किसी तीर्थ से कम नहीं कहा जा सकता। निश्चित रूप से माणा होकर आने वाले तीर्थयात्रियों के मन में जिस उत्साह को, देश के प्रति गौरव के भाव को देखा है, वह सीमांत पर्यटन योजना की सफलता के शताधिक प्रतिमानों को

उच्चतम स्तर पर छूता है। भारतदेश को देखने का यह अनूठा कार्य सिद्ध होता है। इसी वर्ष लगभग तीन माह पहले उत्तराखंड के उत्तरकाशी जनपद के हरसिल गाँव के निकट जादुंग गाँव को नया पर्यटन स्थल बनाया गया है। भारत–तिब्बत सीमा पर स्थित जादुंग गाँव को माणा की तरह भारत का पहला गाँव कहा जाता है। कुछ समय पहले तक हरसिल पर्यटन केंद्र के रूप में पर्यटकों की पसंद होता था। इससे आगे सीमा सुरक्षा के कारण जाने की अनुमति नहीं होती थी। अब पर्यटकों के लिए यह गाँव सुलभ हो गया है। चाहे माणा गाँव हो या जादुंग गाँव हो...।

सीमावर्ती इन गाँवों में जुट जाने वाले सारे देश को, देश के हर भाग से..., उत्तर से लगाकर दक्षिण और पूरब से लगाकर पश्चिम तक देश के हर कोने से जब माणा और जादुंग आदि गाँवों में लोग पहुँचते होंगे, तो गाँव के लोगों की प्रसन्नता की क्या सीमा होती होगी, हमारे लिए केवल कल्पना का ही विषय हो सकता है। इतना अवश्य है, कि पिछले कई वर्षों में पृथक और एकाकी जैसा जीवन बिताने को विवश इन सीमावर्ती गाँवों के लोग कभी तो यह सोचते ही होंगे कि आखिर हमारा देश कैसा है, कौन–सा है, जो हमारी सुधि ही नहीं लेता। उनकी यह व्यथा, उनके मन का यह भाव टीस की तरह उभरता तो अवश्य ही होगा। सीमांत पर्यटन योजना ने इस दर्द को समेटा है। चाहे उत्तराखंड की सरकार हो, या केंद्र की मोदी सरकार हो, इस दर्द को अनुभूत किया है, देश के छोर पर बैठे आमजन की व्यथा को समझा है। इस दृष्टि से भी सीमांत पर्यटन योजना अपना विशेष महत्त्व रखती है। कल्पना करें, जम्मू व काश्मीर के उन सीमावर्ती क्षेत्रों की जहाँ यह पता नहीं होता, कि कब गोले बरसने लगेंगे और कब ताबड़तोड़ गोलीबारी होने लगेगी।

हम अपनी सीमाओं में शांति के पक्षधर हैं, लेकिन अशांति ही जिनको रास आती है, वे कहाँ चुप रहने वाले हैं। ऐसी दशा में रहने–जीने वाले सीमावर्ती गाँवों के रहवासियों के जटिल जीवन की कल्पना–मात्र ही रोंगटे खड़े कर देती है। अनेक संकट और बाधाएँ सहकर भी वे अपनी धरती नहीं छोड़ते। देश के प्रति उनका लगाव कम नहीं होता। वे सेना और सैनिकों की सहायता को अपना धर्म समझते हैं। इसके बदले वे कोई अपेक्षा नहीं रखते, कोई लाभ नहीं माँगते। इन

सीमावर्ती गाँवों के लोग किसी सैनिक से कम नहीं, इनकी देशभक्ति, इनका जज्बा किसी से कम नहीं। ऐसी पुण्यश्लोका धरा, जिसने ऐसे वीर सपूतों को जन्म दिया है। ऐसी गौरवशाली धरती, जो इन कर्मठ भारतीयजनों को पालती–पोसती है, उसके दर्शन के लिए हर भारतीय को जाना चाहिए, जाना ही चाहिए। प्रायः यह भाव और विचार जम्मू–कश्मीर की समृद्ध सीमा योजना और सीमांत पर्यटन योजना में परिलक्षित होता है, दिखता है। जम्मू–कश्मीर में सीमांत पर्यटन योजना को तेजी के साथ धरातल पर उतारा जा रहा है। अनेक ऐसे गाँवों में संसाधनों का विकास किया जा रहा है। सड़कों से लगाकर बिजली और पानी के साथ ही इंटरनेट की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा रहीं हैं। लोगों को प्रोत्साहित किया जा रहा है कि वे पर्यटन को अपने रोजगार का माध्यम बनाएँ। यद्यपि पूरे प्रदेश की आय का बड़ा भाग पर्यटन से संबंधित है, तथापि सीमांत पर्यटन ने लोगों के लिए नए आयाम सृजित किए हैं, नई दिशाएँ दी हैं। इसके सकारात्मक प्रभाव सामने आने लगे हैं।

जम्मू–कश्मीर से अलग होकर अस्तित्व में आए लद्दाख केंद्रशासित प्रदेश में भी सीमांत पर्यटन की असीमित संभावनाएँ हैं। सियाचिन हिमानी, चंगथंग का मैदान, तुरतुक और बोगदंग आदि गाँव नए पर्यटन–केंद्र के रूप में उभरे हैं। तुरतुक, त्याक्शी, चालुंका, बोगदंग और थांग गाँव लद्दाख की उत्तर–पश्चिमी सीमा में हैं। हमारी सेना के शौर्य और पराक्रम की गाथाएँ यहाँ के कण–कण में बसी हैं। एकदम अलग संस्कृति, बल्टी तहजीब यहाँ देखने को मिलती है। सीमांत पर्यटन योजना के अंतर्गत ये गाँव नए पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हुए हैं। यहाँ के लोगों की आय के नए रास्ते खुले हैं। देश भर के अलग–अलग भागों से आने वाले पर्यटक इस भूमि का दर्शन करके देशानुराग को अनुभूत करते हैं, गौरवान्वित होते हैं।

सीमांत पर्यटन योजना के अंतर्गत केवल हिमालयी परिक्षेत्र ही नहीं बल्कि कच्छ का रन, बंगाल की खाड़ी, भारतमाता के पाँव पखारता सिंधुसागर भी सीमांत पर्यटन योजना से जुड़ता है। अनेक विविधताओं को, संस्कृतियों के अलग–अलग रंगों को एक में समेटे, एकात्मता का राग गाते भारतदेश की सीमाएँ ही यदि घूम ली जाएँ....., सीमांत क्षेत्रों का पर्यटन ही कर लिया जाए, तो देश की तमाम सांस्कृतिक झाँकियों से साक्षात्कार हो जाता है। भारत देश की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर पर, वैविध्य में समाहित एकात्मता पर गर्व का भान हो जाता है। भारतीयता का पाठ पढ़ने–पढ़ाने के लिए सीमांत दर्शन योजना, सीमांत पर्यटन योजना अद्‌भुत है, अनुपम है, अतुल्य है।

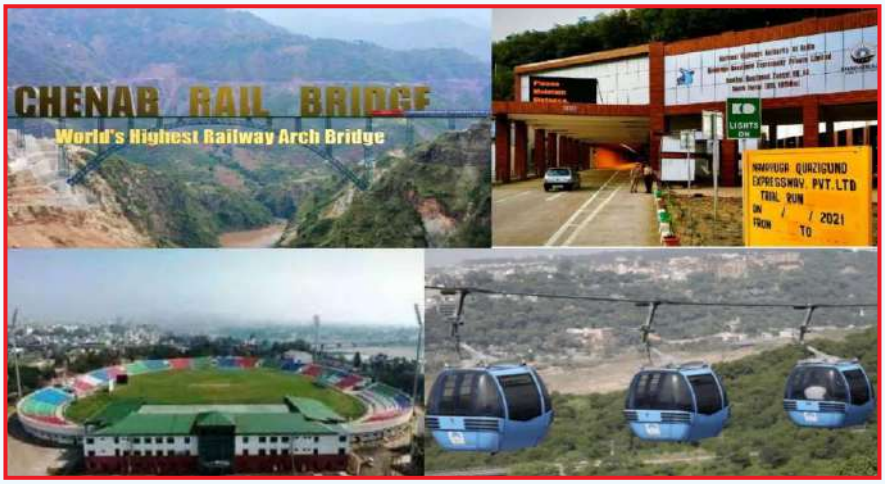

लोकतंत्र के लिए खतरा बनता 'सिस्टम'

युवराज पल्लव
राष्ट्रवादी चिंतक और लेखक

लोकतन्त्र में चुनाव को उत्सव बताया जाता है। लेकिन प. बंगाल में बीते कुछ चुनावों से जबरदस्त हिंसा दिखाई दे रही है। बमबारी, चाकू, बंदूक, लूटमार, हत्याएं, बलात्कार तो जैसे प. बंगाल की संस्कृति का हिस्सा बन चुका है। आए दिन ईवीएम हैक का रोना रोने वाले विपक्ष की मांग बैलेट से चुनाव कराने की रही है। इन त्रिस्तरीय पंचायती चुनावों में यह स्पष्ट हुआ कि वे ऐसी पिछड़ी, भ्रमित मांग क्यों करते रहे हैं। वास्तव में आज लोकतंत्र को सबसे बड़ा खतरा ऐसे कथित लोकतंत्र के रक्षक, स्वयंभू 'स्तंभ' ही हैं। जो धूर्तता की पराकाष्ठा पर खड़े होकर निर्लज्ज रूप से लोकतांत्रिक मूल्यों, मानवतावादी, पंथनिरपेक्ष सिद्धांतों के पुरोधा और प्रहरी के रूप में स्वयं को बताते रहते हैं। लेकिन जब भी विषय गैर भाजपाई वामपंथी, कथित सेकुलर या समाजवादी दलों की सरकारों द्वारा की जा रही लोकतांत्रिक हत्याओं, बलात्कार का होता है, ये सांप सूंघ कर बैठ जाते हैं। सालों से देखने में आ रहा है कि मुख्य धारा मीडिया हो, स्वयंसेवी संगठन हो, या न्यायपालिका में बैठे स्वयंभू 'न्याय के देवता' सभी में एक अच्छी संख्या ऐसे लोगों की है, जो एक पक्षीय पक्षपात करते हैं और दिखते हैं।

हाल ही का उदाहरण देखिए, कैसे एक कथित 'सोशल एक्टिविस्ट' जो गुजरात राज्य में जनता द्वारा बहुमत से चुनी सरकार को अस्थिर करने का षड्यंत्र करती है, पैसों के बल से सबूत पैदा करती है। जिसके खिलाफ ढ़ेरों सबूत खड़े हैं। इसके बावजूद 'बड़े लॉर्ड साहब' की पंचायत उसे अंतरिम बेल दे देती है। और वो भी लगभग साल भर के लिए। हुजूर! इतनी लंबी अंतरिम बेल!? किसी गरीब को मिलती देखी है कभी? इतना ही नही लोकतंत्र की हत्या के प्रयास में आकंठ डूबी इस 'सोशल एक्टिविस्ट' को हाई कोर्ट के न्याय से बचाने के लिए कैसे 'बड़े लॉर्ड साहब' लूंगी चढ़ा कर न्यायालय के दरवाजे की ओर दौड़े और छुट्टी के समय में भी दरवाजे न सिर्फ खोल देते हैं, बल्कि पहले दो जजों की बेंच बनती है।

निर्णय में मतैक्य न होने के कारण उसी समय तीन जजों की बेंच भी बना देते हैं और उसी रात से सुनवाई भी शुरू हो जाती है जो एक दिन भोर तक चलती है। और तो और सरकारी वकील के तर्कों का संतुष्टिदायक जवाब न देते हुए भी पूर्वाग्रह से ग्रस्त दिखते हुए अपनी मुक्तिदायक भूमिका का निर्वहन कर उस कथित 'सोशल एक्टिविस्ट' को गिरफ्तारी से राहत भी देते हैं। कारण! क्योंकी वह महिला है। 'महाराज!' महिला तो भारत की जेलों में सालों से बंद न्याय को तरसती वे विचाराधीन अपराधी भी हैं, जिनके पास न्याय के लिए न तो 'पैसा' और न ही विपक्षी सत्ता से संबंध हैं। महिला तो वे विचाराधीन कैदी भी हैं जो अपने छोटे छोटे बच्चे से अलग कर दी गई हैं, और रंजिशन मिलीभगत के कारण फंसा दी गई हैं। उनके लिए आपके दरवाजे क्यों नहीं खुलते? क्यों आधी रात को उन बेगुनाहों के लिए आप ठीक उसी तरह न्याय नहीं करते जैसा कथित रूप से सामाजिक आतंकियों और बौद्धिक आतंकियों के लिए करते हैं? जो देश समाज के लिए जनता की नजरों में वर्षों से खतरा बने हुए हैं। चाहे मामला अवैध बांग्लादेशी घुसपैठ का हो, रोहिंग्या का हो, कश्मीरी आतंकियों का हो या इन लोगों द्वारा जमीन कब्जाने का या CAA/NRC का हो। तीव्र गति से ऐसे देश के खतरों के लिए कभी मानवता के आधार पर, कभी पंथनिरपेक्षता के नाम पर, कभी मजहबी आजादी के नाम पर मीडिया से लेकर कोर्ट तक में बैठे ऐसे शैतानी लोग सक्रिय हो जाते हैं और स्वाभाविक न्याय की आस लगाए बैठी आमजनता को ठग लिया जाता है। यदि ये जल्दी ही नहीं सुधरे तो फिर जो होगा, वह कवि रामधारी सिंह दिनकर के शब्दों में, 'जनता जब कोपाकुल हो भृकुटि चढाती हैय दो राह, समय के रथ का घर्घर–नाद सुनो, सिंहासन खाली करो कि जनता आती है'।

जब जनता आयेगी तो ये न समझें कि गाज राजाओं पर ही गिरेगी। फिर वह गाज राजदरबार के दरबारियों पर भी गिरेगी। जनता उनको भी उनके कॉलर पकड़ उखाड़ फेंकेगी। क्योंकि संविधान भी 'हम भारत के लोगों द्वारा' ही 'स्वीकार, अंगीकार' किया गया है। इसके असली रक्षक कोई संस्था नहीं इसे बनाने वाली भारत की बहुसंख्यक जनता ही है। क्योंकि ये मूल्य उन्होंने किसी किताब से नहीं सीखे। ये हजारों वर्षों की अपनी संस्कृति,सभ्यता, संस्कारों से प्राप्त किए हैं।

हिंदू तीर्थ स्थानों के व्यापारिक प्रतिस्थापनाओं पर मुस्लिम बाहुल्य

डॉ. प्रताप निर्भय सिंह
(प्रेरणा जनसंचार एवं शोध संस्थान, नोएडा)

भारतीय आध्यत्मिक विरासत को संजोए हुए कुछ स्थान संपूर्ण विश्व में विख्यात हैं, और प्रत्येक हिंदू के लिए श्रद्धा का केंद्र हैं। देश के कोने–कोने से श्रद्धालु इन पवित्र तीर्थ स्थलों के दर्शन हेतु प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में आते हैं, जिसके कारण से यह तीर्थ स्थल धार्मिक आस्था के केंद्र होने के साथ–साथ एक बड़े अर्थ–तंत्र का विकास भी करते हैं। अनेक तीर्थ स्थल हजारों वर्षों से अपने आसपास रहने वाले एक बहुत बड़े जन समुदाय की रोजगार और आजीविकोपार्जन का स्रोत हैं।

पिछले कुछ दशकों में यह देखने में आया है कि हिंदू तीर्थ स्थलों के आसपास विधर्मी मुस्लिमों की संख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है, और इसका एक प्रमुख कारण है हिंदू तीर्थ स्थलों से जुड़े आर्थिक तंत्र पर कब्जा। हिंदू धार्मिक कर्मकांड और पूजन अर्चन से संबंधित सामग्री का एक बड़ा बाजार है जिसे मुख्य रूप से हिंदू कारोबारी ही संचालित करते आए थे, वर्तमान में इस कारोबार में विधर्मी मुस्लिम समुदाय ने घुसपैठ कर ली है। इन्होने बड़ी कूटनीति से हमारे धर्म स्थलों से जुड़े बाजार तंत्र पर कब्जा कर स्थानीय हिंदू कारोबारियों को सदियों से चली आ रही उनकी परंपरागत व्यावसायिक गतिविधियों से बाहर कर दिया है। प्रस्तुत लेख इसके गंभीर खतरे और दुष्परिणामों के प्रति सतर्क रहने, सामाजिक और प्रशासनिक स्तर पर अनुकूल निर्णय लेने पर मंथन करने का प्रयास है।

इस कारोबार जिहाद का सबसे बड़ा उदाहरण है देवभूमि उत्तराखंड जहाँ अनेक पुरातन तीर्थस्थलों सहित विश्व प्रसिद्ध चार धाम यात्रा, कुंभनगरी हरिद्वार, योग नगरी ऋषिकेश, श्री अमरनाथ जी जैसे महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल हैं। आश्चर्य की बात यह है कि मुस्लिम आक्रांताओं के शासनकाल में भी देवभूमि उत्तराखंड में मुस्लिम आबादी न के बराबर थी, आंकड़ों के अनुसार आज वह तेजी से बढ़ी है। अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के महासचिव हरि गिरि महाराज के अनुसार1, उत्तराखंड राज्य का गठन लगभग बीस वर्ष पहले हुआ था। 2001 की जनगणना के अनुसार राज्य में 11. 9 प्रतिशत मुस्लिम आबादी थी, जो 2011 में बढ़ कर 13.94 प्रतिशत हो गई। 2011 में हरिद्वार जिले में मुस्लिमों की आबादी 1,89,0422 थी, अब यह 4,78,000 को पार कर गई है। उत्तर प्रदेश से लगे उधमसिंहनगर जिले में भी पिछले बीस साल में मुस्लिम आबादी की बसावट बड़ी संख्या में दर्ज की गई है। पूरे राज्य का आंकलन करें तो मैदानी चार जिलों में मुस्लिम आबादी तीस प्रतिशत के पार हो रही है, अन्य नौ जिलो में मुस्लिम बसावट 2001 से 2011 तक कम थी, लेकिन 2022 तक इसमें भी अप्रत्याशित वृद्धि हुई है। मुस्लिम आबादी की बसावट को लेकर आई. बी. ने भी केंद्र को चेताया है2 वेल्डर, मैकेनिक, राजमिस्त्री, मजदूर, कार पेंटर, सब्जी विक्रेता के छोटे कारोबार करने वाले तिब्बत चीन नेपाल सीमा तक जा बसे हैं।

हाल ही में एक और रिपोर्ट भी सामने आई थी कि पहाड़ों में वन भूमि पर अवैध मजारें बन चकी थी। रामनगर, कालाढूंगी, टनकपुर बनबसा, चंपावत, भवाली, बागेश्वर, धारचूला, कोटद्वार, पौड़ी, श्रीनगर सतपुली, पिथौरागढ़ पहाड़ी इलाके हैं, जहां सुनियोजित ढंग से

मुस्लिम आबादी की बसावट हो रही है। यहां मजारें, मस्जिदें कैसे बन गईं, जबकि उत्तराखंड ही नहीं पूरे देश में किसी नए पूजा स्थल के निर्माण पर रोक लगी हुई है। उत्तराखंड के किच्छा, लक्सर, ज्वालापुर, खटीमा, सितारगंज, रुद्रपुर, जसपुर, सुल्तानपुर पट्टी, गदरपुर, हल्द्वानी आदि कस्बे ऐसे हैं जो भविष्य में करीब 33 फीसदी मुस्लिम आबादी वाले हो जाएंगे।

खुफिया रिपोर्ट के अनुसार पिछले बीस साल में उत्तराखंड से स्थानीय लोगों का पलायन तेजी से हुआ है, रोजगार की तलाश में पहाड़ के लोग मैदानी इलाकों की ओर रुख कर चुके हैं। पहाड़ों पर खाली हुए खेत खलिहानों में मुस्लिम आबादी ने कब्जा कर लिया है, मजदूरों के रूप में रुहेला, बांग्लादेशी मुस्लिम लोग यहां आकर बस चुके हैं। वोटों की राजनीति के चलते मतदाता सूची में इनके नाम चढ़ रहे हैं और आधार कार्ड भी बन रहे हैं। उत्तराखंड के हिन्दू एक्टिविस्ट और संत स्वामी दर्शन भारती के मुताबिक,3 इस आबादी में बांग्लादेशी और रोहिंग्या घुसपैठी भी शामिल हैं जो नदी के किनारे झुग्गियों को कब्जा करते हुए आगे फैलते जा रहे हैं, उन्होंने तमाम सरकारी दस्तावेज भी बनवा डाले हैं।" सब्जी, मीट, पंचर, नाई आदि सभी पर मुस्लिम काबिज है। हरिद्वार के पास स्थित चिड़ियापुर में लाईन से खाने–पीने की दर्जनों दुकानें हैं। उन तमाम दुकानों के नाम बद्री केदार, गंगोत्री जैसे हिन्दू देवी देवताओं के नाम पर रखे गए हैं। लेकिन उनमे से मात्र 3 दुकानें हिन्दुओं की हैं। बाकी सभी मुस्लिम समुदाय की। देहरादून में कई मुस्लिमों की दुकानें नाम बदल कर चल रही हैं। इसके अलावा फर्नीचर, वेल्डिंग, पानी, खनन और बिल्डिंग मैटेरियल के कामों में भी मुस्लिमों का प्रभुत्व हो गया है। "केदारनाथ धाम में 90 प्रतिशत घोड़े मुस्लिमों के चलते हैं। जिन हिन्दुओं के इन धंधों पर कब्जे जमाए गए वो हिन्दू अब नौकरी कर अपने बच्चे पाल रहे हैं। हिन्दुओं के हाथ से गए सभी काम थोक

पैसे वाले थे जिसमें ळैज या कोई अन्य टैक्स का झंझट भी नहीं था।" ऋषिकेश में हिन्दू युवा वाहिनी के पदाधिकारी अमन पांडेयके अनुसार, "ऋषिकेश में भी कई मुस्लिम कारोबारी नाम बदल कर काम करते हैं।

यूपी के मुजफ्फरनगर जिले में राष्ट्रीय राजमार्ग में मुस्लिम कारोबारियों द्वारा हिंदू नाम रखकर ढाबे, चाय के खोके आदि खोले जाने की शिकायतें आ रही थीं,4 जिस पर पुलिस ने कार्रवाई कर इन्हें बंद कराया है। ऐसे एक दो नहीं पश्चिम उत्तर प्रदेश में मेरठ, गजरौला, गढ़ मुक्तेश्वर, मूंडपांडे हाईवे पर भी दर्जनों ढाबे चल रहे है5। इन ढाबों में काम करने वाले लोगो के नाम राजू, गुड्डू, सोनू, विक्की, जैसे होंगे गले में माला हाथो में मोटा कलावा बांधे हुए होंगे,एक नजर में कहीं भी ग्राहक को नहीं लगेगा कि ये हिंदू नही है। हरिद्वार हिन्दू सनातन धर्म का सबसे बड़े धार्मिक केंद्र के रूप में जाना जाता है। हिंदू धर्म के सभी मठ,सभी अखाड़े, आध्यात्मिक केंद्र हरिद्वार में है जहां से सनातन धार्मिक गतिविधियों का संचालन होता आया है। कुंभ मेला दुनिया का सबसे बड़ा धर्म मेला यही होता है और हर साल तीन करोड़ से ज्यादा कांवड़ श्रद्धालु यहां से गंगा जल लेने आते है, हिन्दू धर्म की आस्था और विश्वास की इस नगरी के आसपास मुस्लिम आबादी तेजी से बढ़ रही है। एक तरह से कहे कि पूरे हरिद्वार शहर को मुस्लिम आबादी ने घेर लिया है और अब अवैध रूप से गंगा किनारे वन विभाग और कैनाल की जमीन पर इनकी बसावट हो रही है। उल्लेखनीय है कि 1916 में मदन मोहन मालवीय ने गंगा आंदोलन के समय ब्रिटिश हुकूमत के साथ ये करार किया था गंगा किनारे स्थित हिंदू तीर्थ स्थलों में गैर हिंदू का रात्रि में रुकना वर्जित है। इस वाक्य के पीछे यही अर्थ था कि कोई भी गैर हिंदू गंगा किनारे तीर्थ स्थलों में स्थाई निवासी नहीं बन सकता है।

एक हिंदी दैनिक में काम करने वाले पत्रकार दिलशाद अली के अनुसार6, "गंगा नदी में डुबकी लगाने के बाद हिंदू तीर्थयात्रियों का मुंडन करने वाले सभी नाई मुसलमान ही हैं। ये नाई प्रतिदिन अपने गांवों से हरिद्वार काम करने के लिए आते हैं। "प्रेस क्लब ऑफ हरिद्वार के अध्यक्ष राजेंद्र नाथ गोस्वामी ने बताया कि स्थानीय हिंदू निवासियों को विभिन्न प्रकार की सेवाएं प्रदान करने, व्यापार करने के लिए सैकड़ों मुसलमान रोजाना हरिद्वार आते हैं। हरिद्वार में प्लंबिंग, इलेक्ट्रिकल और ऑटोमोबाइल रिपेयरिंग समेत अन्य सभी प्रकार के काम ज्यादातर मुस्लिम टेक्नीशियन करते हैं। 'कांवर' या 'बहंगी', जिसका उपयोग "गंगा जल" ले जाने के लिए किया जाता है उसका निर्माण मुसलमानों द्वारा किया जाता है। यह कारोबार करोड़ों रुपये का है।

उत्तराखंड के चारों धामों सहित सुदूरवर्ती श्री हेमकुंड साहिब तक गैर हिंदू प्रवेश कर चुके हैं।7 केदारनाथ श्री हेमकुंड साहिब पैदल मार्ग पर घोड़े खच्चर वाले, पीठू, पालकी वाले मुस्लिम वहां स्थाई रूप से बसते जा रहे हैं। पहले ये लोग यात्रा समाप्त होते ही मैदानी क्षेत्रों में चले आते थे, लेकिन अब यात्रा के बाद भवन सामग्री, नदियों से खनन सामग्री, गांवों में फल, सब्जी की ढुलाई करते रहते हैं, यही नहीं ये लोग हिंदू पूजा सामग्री नारियल आदि के कारोबार को कब्जा चुके हैं।

जब भी आप किसी गैर हिंदू से नाम पूछेंगे तो वो अपना नाम राजू, पिंटू, बंटी, हयात, गुलु, हरी जैसा बताएगा जैसे ही आप उसका आधार कार्ड देखेंगे तो असल नाम पता चल जाएगा या फिर ऑनलाइन भुगतान के लिए कोड स्कैन करेंगे तो सत्यता मालूम चल जाएगी। इन्हें रोकने के लिए हिमाचल प्रदेश की तर्ज पर भू कानून लागू करने की महती आवश्यकता है। उत्तराखंड बनते ही हरिद्वार जिले में उद्योगों का जाल बिछा जिसमे लेबर सप्लाई करने वाले ठेकेदारों ने काम की तलाश में आये यूपी के जिलो के मुस्लिमों की भर्ती बड़े पैमाने में कर दी। तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने यहां के उद्योगों में सत्तर फीसदी रोजगार स्थानीय लोगो को दिए जाने का फैसला कैबिनेट और विधान सभा में लिया था, उद्योगों के लेबर ठेकेदारों ने जो कि ज्यादातर मुस्लिम थे उन्होंने योजना बद्ध तरीके से अपनी मुस्लिम लेबर को स्थानीय निवासी बना दिया और सरकारी आदेशों की खाना पूर्ति कर दी। इसके अलावा गंगा और उसकी सहायक नदियों में खनन के काम में पश्चिम यूपी ,बिहार, असम से आये मुस्लिम मजदूर यहां आकर नदी किनारे अवैध रूप से बसते चले गए जोकि अब यहां की वोटर लिस्ट में दर्ज हो गए, स्थानीय कांग्रेसी नेताओ विधायको ने इस काम को बखूबी अंजाम दिया।

हरिद्वार के ज्वालापुर क्षेत्र के बीजेपी विधायक रहे सुरेश राठौर ने अकटुबर 2019 में सार्वजनिक रूप से ये बयान दिया था8 कि हरिद्वार गंगा किनारे 67 किमी तक मुस्लिम आबादी बढ़ती जा रही है जिसकी पड़ताल होनी चाहिए कि कौन लोग यहां आकर बस गए। हिंदू तीर्थ नगरी ऋषिकेश में अवैध मजारों की भरमार हो गई है। प्रशासन ने ऐसी यहां 30 मजारों को चिन्हित किया है।9 हिंदुओं की इस तीर्थ नगरी में जहां ब्रिटिश शासनकाल से किसी भी गैर हिंदू को रात्रि में रुकने की इजाजत नहीं थी, वहां एक षड्यंत्र के तहत हिंदुओं के घरों के आसपास या निजी जमीन पर मजारें बना दी गई हैं। श्री अमरनाथ धाम यात्रा में घोड़े और खच्चर उपलब्ध कराने वाले करोड़ों के कारोबार पर भी मुस्लिम समुदाय का ही कब्जा है जो यात्रा की सुरक्षा के लिए भी खतरा है। शंकराचार्य परिषद के प्रमुख और शाम्भवी पीठाधीश्वर स्वामी आनंद स्वरूप कहते हैं कि, 'क्या होगा अगर खच्चर चलाने वालों, या व्यापारियों के वेश में आतंकी लोग चार धाम तीर्थ स्थलों पर हमला कर दें? देश के दूसरे हिस्सों में राम नवमी और हनुमान जयंती के दौरान हिंदू जुलूसों पर हुए हमलों को देखते हुए, हमारे तीर्थ स्थानों और मंदिरों को खतरा वास्तविक हो जाता है'। स्वामी जी ने इस बात को उठाया है कि10 हिमालय विश्व की सनातन धर्म की आध्यात्मिक राजधानी है, यहां गैर हिंदुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब मक्का मदीना में हिन्दू नहीं जा सकते तो यहां पर गैर हिन्दुओं के आने पर पाबंदी क्यों नहीं लगनी चाहिए? हिंदू संतों की मुख्य इकाई अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद, जो कि कुंभ मेले का भी आयोजन करता है, उसके प्रमुख रवींद्र पुरी ने भी शंकराचार्य परिषद की ओर से उठाई गई मांग का समर्थन किया है। उत्तरी भारत ही नहीं देश के अन्य हिंदू तीर्थ स्थानों पर भी ऐसा ही देखने में आ रहा है।

बिहार के सुल्तानगंज में गंगा नदी से जल लेकर करोड़ों कांवड़िये झारखंड के देवघर जिला स्थित विश्व प्रसिद्ध वैद्यनाथ धाम में11 जलाभिषेक करते हैं। इस कांवड़ यात्रा के अधिकांश कांवड़ 12 और भगवा केसरी कपड़ों के बड़े कारोबार पर मुस्लिम समुदाय कब्जा कर चुका है। नवरात्र पूजा में चुनरी का विशेष महत्व है, इसका कारोबार भी करोड़ों रुपये का है, रामपुर के मुस्लिम व्यावसायी जमीर अहमद के अनुसार उनकी बनाई चुनरी की डिमांड उत्तर प्रदेश के अलावा उत्तराखंड, हिमांचल, उड़ीसा, झारखंड आदि राज्यों में है।13 रामपुर के ग्राम अजीतपुर में चांदनी कारचोब हाउस द्वारा देश के करीब आधा

दर्जन राज्यों में उनकी चुनरी की सप्लाई हो रही है। स्पष्ट है कि देश के आधे से अधिक राज्यों के प्रमुख देवी मंदिरों में श्रद्धालु यहां बनी चुनरी चढ़ाते हैं।14 कासगंज के सोरों क्षेत्र में गंगा किनारे बसा गांव कादरबाड़ी15, में भी कांवड़ से सम्बंधित सामग्री मुस्लिम बनाते हैं जिसे सोरों, रामघाट के साथ अन्य स्थानों पर भेजा जाता है। कानपुर में भी कावंड़ से जुड़ी हुए अस्थायी सैकड़ों फैक्ट्रियां हैं जहां पर कावंड़ यात्रा से जुड़ी हुई आधुनिक वस्तुए बनायी जाती है और देश के कोने कोने में आपूर्ति होती है।

कानपुर की ये सैकड़ों फैक्ट्रियां मुस्लिम समुदाय की हैं जहां पर कार्य करने वाले कारीगर भी अधिकतर मुस्लिम ही होते हैं। सिर्फ कावंड़ वस्तुए ही नहीं बल्कि तीर्थ से जुड़े ट्रांसपोर्ट वाहन, होटल, सब्जी और सप्लाई चैन आदि के नेटवर्क पर मुस्लिम काबिज हैं और अपने ही लोगों को काम मुहैया कराते हैं। महाकाल की नगरी उज्जैन के अधिकतर होटल भी मुस्लिमों के है जो हिन्दू नामों से संचालित हैं। श्री राम नगरी अयोध्या जी में भी कारोबार मुस्लिमों के हाथ में है 16 अयोध्या आएंगे तो आपको 90 फीसदी मुस्लिम परिवार यहाँ के कारोबार में लीन मिलेंगे।17 कर्नाटक में उडुपी जिले के कापू शहर में मारी गुड़ी मंदिर प्रबंधन ने हिंदू सगठनों के अनुरोध पर18 सालाना उत्सव के दौरान अन्य धर्म के लोगों को मंदिर की जमीन पर कारोबार नहीं करने देने का फैसला किया था। मंदिर प्रबंधन को सौंपे गए एक ज्ञापन में कापू के तुलुनाडु हिंदू सेना ने अपील की थी कि 'सुग्गी मारी पूजा' उत्सव के दौरान किसी भी मुस्लिम को व्यापार करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। उनके अनुसार ''जो लोग हमारे भगवान, हमारे धार्मिक स्थलों का सम्मान नहीं करते हैं और एक अलग धर्म का पालन करते हैं, उन्हें हमारे धार्मिक त्योहारों के दौरान व्यापार नहीं करना चाहिए। इसी तरह के बैनर पद्बिदरी मंदिर उत्सव और दक्षिण कन्नड़ जिले के कुछ मंदिरों में भी लगाए

गए थे।19वर्ष 2022 में भगवान श्री कृष्ण की नगरी द्वारिका, जो हिंदू आस्था का एक बड़ा केंद्र है और भारत के चार प्रमुख धामों में से एक है, से संबंधित प्रमुख स्थलों पर मुस्लिम अतिक्रमण का सनसनीखेज मामला भी सामने आ चुका है। क्षेत्र के डीएसपी समीर सारडा के अनुसार यहाँ मुस्लिम समुदाय ने पहले मजार बनाकर लोगों में विश्वास पैदा किया और मजार की आड़ में अवैध रूप से कब्जे का खेल शुरू हो गया। उन्होंने बताया कि इस टापू पर रमजान गनी पलानी नाम के व्यक्ति ने ने 5000 वर्ग फुट जमीन पर कब्जा कर लिया था। चिंता का विषय तो यह भी है कि रमजान गनी पलानी को वर्ष 2019 में 500 किलो ड्रग्स की तस्करी के आरोप में एनआईए ने गिरफ्तार किया था। वह पाकिस्तान के मछुआरों की मदद से देश में ड्रग्स की तस्करी को अंजाम दे रहा था। सका बेटा जावेद भी अवैध तस्करी के आरोप में पाकिस्तान की जेल में बंद है। जबकि रमजान ड्रग तस्करी के आरोप में हिंदुस्तान की जेल में कैद है। मामला संज्ञान में आने के बाद 10 से 12 वर्ग किलोमीटर में फैले बेट द्वारका में 6 दिनों तक चली कार्रवाई में द्वारका जिला प्रशासन ने बेट द्वारका से 113 अवैध स्ट्रक्चर को तोड़ा। इनमें 5 मजार भी शामिल थीं। अवैध कब्जे से मुक्त हुई जमीन की कीमत करीब 6 करोड़ 50 लाख रुपए है। एक खबर के अनुसार 2005 में ली गई सैटेलाइट इमेज के मुताबिक यहां 6 मस्जिदें थीं। अब यह आंकड़ा 78 हो चुका है। इसमें मस्जिद, मजार और दरगाह शामिल हैं। ज्यादातर अवैध हैं और सरकारी जमीन पर बनी हैं। 20 1945 में यहां शासन कर रहे गायकवाड़ वंश ने सभी को जगह दिया था।

1960 की जनगणना के मुताबिक, यहां मुस्लिम वोटर 600 और हिंदू 2,786 थे। समय के हिसाब से हिंदुओं की आबादी 6000 और मुस्लिमों की 1200 होनी चाहिए थी, लेकिन हिंदू घटकर 960 रह गए और मुस्लिमों की संख्या 9,500 पर पहुंच गई। आज बेट द्वारका में मंदिर से ज्यादा मस्जिद और मजारें दिखाई पड़ती हैं। क्योंकि इस बेट द्वारका की 80 प्रतिशत आबादी मुस्लिम है। इस क्षेत्र की कुल आबादी लगभग 12000 है जिसमें से लगभग 9500 लोग मुस्लिम हैं। साल 2021 में सुन्नी वक्फ बोर्ड ने बेट द्वारका के दो जगहों को अपना बताने की कोशिश की थी लेकिन गुजरात हाईकोर्ट ने सुन्नी वक्फ बोर्ड को फटकार लगाते हुए कहा था कि कृष्ण की नगरी में आप ये दावा कैसे कर सकते हैं। याचिका को खारिज कर दिया था। गुजरात के जामनगर से बीजेपी21 पूनमबेन मदान ने बाद में स्पष्ट किया कि वक्फ बोर्ड ने शियाल बेट पर दावा किया था न कि बेट द्वारका के दो द्वीपों पर। जबकि स्थानीय समाचार रिपोर्ट के जरिए इस बात का खुलासा किया गया था कि हाई कोर्ट में एप्लीकेशन वक्फ बोर्ड ने नहीं, बल्कि एक निजी सुन्नी ट्रस्ट ने दायर की थी।

शियाल बेट अमरेली जिले के अंतर्गत आती है, जबकि बेट द्वारका देवभूमि द्वारका जिले का हिस्सा है। गुजरात हाई कोर्ट की पीठ ने सुनवाई करते हुए कृष्णनगरी शब्द का जिक्र किया था, जिसके कारण भ्रम की स्थिति उत्पन्न हुई। बेट द्वारका से कराची की दूरी 105 किलोमीटर है। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि ये देश के लिए कितना बड़ा खतरा साबित हो सकता है। पाकिस्तान की रहने वाली बहुत सी लड़कियों की शादी यहां और यहां की कई लड़कियों की शादी पाकिस्तानी में हुई है।

इस तरह पाकिस्तान की लड़कियां यहां बस गयी हैं। जिससे यहां हो रहे इस्लामीकरण के कराची कनेक्शन का खुलासा होता है। बेट द्वारका में जमीनों पर अवैध कब्जों के साथ–साथ ड्रग तस्करी का कारोबार भी खूब किया जाता है। जिसके चलते इस क्षेत्र में रही ये सारी गतिविधियां भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बनी हुई हैं। जिले के पुलिस अधीक्षक नितेश पांडेय ने बताया कि समुद्री सीमा की सुरक्षा और देश की आंतरिक सुरक्षा के संबंध में बेट–द्वारका में हुआ अतिक्रमण के संबंध में सर्वे कराया गया था। प्रशासन को यह जानकारी मिली थी कि पीएफआई और वक्फ बोर्ड ने ढेरों सम्पत्तियों पर अवैध कब्जा किया हुआ था। इसके पश्चात नियमानुसार अतिक्रमण हटाने के लिए कार्रवाई शुरू की गई थी। ऐसे बहुत सारे उदाहरण पूरे देश में देखे जा सकते हैं, जिनमें हिंदू धार्मिक स्थलों और तीर्थों पर मुस्लिम जनसंख्या का अतिक्रमण होता जा रहा है जिन्होंने ना केवल वहां की डेमोग्राफी बदलकर सुरक्षा के लिए खतरा पैदा किया है अपितु उस क्षेत्र में स्थानीय कारोबार पर भी अपना कब्जा कर लिया है। देश के हिंदू तीर्थ स्थलों पर भी हिंदू कारोबारियों के सारे व्यापार पर मुस्लिम कारोबारियों का कब्जा होता जा रहा है यह एक गंभीर चिंता का विषय है।

सन्दर्भ :-

1. https://hindi। theprint। in/india/ban-entry-of-non-hindus-in-chardham-the-saint-who-spoke-at-haridwar-dharma-sansad-wrote-to-dhami/310877

2. https://vskbharat। com/is-there-any-conspiracy-behind-the-rapidly-growing-muslim-population/

3. https://hindi। opindia। com/national/uttarakhand-muslim-population-increases-from-2-to-14-percentage-claimed-by-swami-darshan-bharti-demography-change/

4. https://panchjanya। com/2022/10/03/252630/bharat/gujarat/illegal-mosques-and-shrines-removed-in-shri-krishnas-city-bet-dwarka/

5. https://panchjanya। com/2023/03/31/273094/bharat/muslim-running-hotel-use-hindu-name/

6. https://hindi। indiatomorrow। net/2022/01/22/muslims-cant-buy-property-in-haridwar/

7. https://panchjanya। com/2023/05/11/279019/bharat/muslims-doing-business-by-changing-name-in-hindu-pilgrimage-area/

8. https://panchjanya। com/2023/03/31/273096/bharat/haridwar-is-surrounded-by-muslim-population/

9. https://panchjanya। com/2023/06/16/284773/bharat/lots-of-illegal-tombs-in-rishikesh/

10. https://panchjanya। com/2022/04/18/230739/bharat/demand-for-ban-on-entry-of-non-hindus-in-char-dham/

11. https://www। aajtak। in/trending/story/Here-shows-communal-harmony-Muslims-make-kawad-120456-2012-07-03

12. https://www। punjabkesari। in/dharm/news/muslim-people-makes-kanvad-in-bihar-and-uttar-pradesh-1029472

13. https://www। jagran। com/uttar-pradesh/moradabad-city-hundreds-of-muslim-families-make-mata-ranis-chunri-19643897। html

14. https://www। jagran। com/uttar-pradesh/moradabad-city-hundreds-of-muslim-families-make-mata-ranis-chunri-19643897। html

15. https://www। amarujala। com/uttar-pradesh/agra/muslim-people-make-gangjali-for-kanwar-in-kadarbari-village-of-kasganj?pageId=1

16. https://www। jagran। com/news/national-ayodhya-diary-here-muslim-artisans-make-lord-sri-rama-sandals-for-worship-in-temples-jagran-special-19734172। html

17. https://www। jagran। com/news/national-decoration-in-ayodhya-temples-is-done-with-the-garland-of-muslim-families-jagran-special-19724321। html

18. https://www। navodayatimes। in/news/khabre/udupi-temple-management-banned-muslims-business-premises-hindu-organizations-appeal-rkdsnt/195443/

19. https://navbharattimes। indiatimes। com/state/tamil-nadu/chennai/demand-for-muslim-traders-not-allow-inside-temple-premises-intensifies-across-karnataka/articleshow/90461202। cms

20. https://www। tv9hindi। com/state/gujarat/gujarat-assembly-election-2022-conspiracy-story-of-illegal-tombs-and-mosques-in-bet-dwarka-au223-1564817। html

21. https://www। opindia। com/2021/12/bet-dwarka-controversy-waqf-board-shiyal-bet-amreli-poonamben-maadan/

मगराज
तिंवरी, जोधपुर (राजस्थान)

रिपु दल फिर से छू ना पाए भारत भू की माटी को

जब मृगपति की मांद में घुस गीदड़ गुर्राने लगते हैं
रंगे सियार सी चादर ओढ़े जब बहुरुपिए ठगते हैं
जब शेरों के शीश काट कायर कपटी ले जाते हैं
नीति-धर्म की तोड़ वर्जना शव विकृत कर जाते हैं
देख रहे हैं अवनि अम्बर अंगार उगलती छाती को!
रिपुदल फिर से छू ना पाए भारत-भू की माटी को।।

काश्मीर में कूटनीति से छलना अब तक जारी है
इसीलिए तो इन पैणों से वीरों की सांसे हारी है
काश्मीर के कांधों पर क्यों संगीनों के साए हैं?
अवनि के उपवन को किसने घातक घाव दिलाए हैं?
प्रति घात पर प्रतिघात हो सबक सिखाओ घाती को।
रिपुदल फिर से छू ना पाए भारत-भू की माटी को।।

बन्द करो अब गीदड़ भभकी निंदा नीति बन्द करो
पांवों की जंजीरें खोलो सेना को स्वतन्त्र करो
भारत मां का भव्य भाल कश्मीर कलेजा अपना है
शस्य-श्यामला उपवन यह आबाद रहे यह सपना है
आबाद रखें अब केसर क्यारी काश्मीर की घाटी को।
रिपुदल फिर से छू ना पाए भारत-भू की माटी को।।

शहीदों की लाशों पर तुमने श्वेत कपोत उड़ाए
के रण को छोड़ कब तुमने शीश खपाए हैं?
तुमसे जब अपनी तरकश के तीर न ताने जाएंगे
शेरों के घर में घुसकर तब कुत्ते भी गुर्राएंगे
गाओ वैदर्भी-पांचाली मत भूलो गौड़ी-लाटी को।
रिपुदल फिर से छू ना पाए भारत-भू की माटी को।।

दिव्य शौर्य की दिव्य प्रेरणा यही हमारी थाती थी
उसी उत्स पर कभी फूलती छप्पन इंची छाती थी
अवनि-अम्बर-अधोभुवन से बाबा बर्फानी बिन्दु से
नोच निकालो मीन-मगर को कलकल करती सिन्धु से
काश्मीर के केसर की क्यारी को पुनः सजाएंगे।
भारत मां के आंचल में हम गीत जीत के गाएंगे।।

१. रिपु = शत्रु/दुश्मन।
२. पैणों- पैणा सांप का बहुवचन। पैणा सांप राजस्थान के रेगिस्तानी इलाके में पाया जाता है। लोक मान्यता है कि पैणा सांप रात्रि में नींद में सोए हुए व्यक्ति की छाती पर बैठकर अपना जहर छोड़ता है और उसकी सांसे पी जाता है।
३. साहित्य में वैदर्भी, पांचाली, गौड़ी और लाटी रीतियां है। गौड़ी और लाटी रीति में ओज गुण की प्रधानता होती है।
४. मीन-मगर = पाकिस्तान और चीन (मछली और मगरमच्छ)
५. अधोभुवन = पाताल।

रूस के वैगनर ग्रुप के परिप्रेक्ष्य मर्सेनरी सेना पर चर्चा

जवान दान
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय बायतु बाड़मेर

एक निजी सेना एक सैन्य या अर्धसैनिक बल है जिसमें सशस्त्र लड़ाके शामिल होते हैं जो किसी राष्ट्र या राज्य के बजाय किसी निजी व्यक्ति, समूह या संगठन के प्रति अपनी निष्ठा रखते हैं। निजी सेनाएँ तब बन सकती हैं जब जमींदार संघर्ष के समय स्वयं और संपत्ति की सुरक्षा के लिए घरेलू नौकरों को हथियार देते हैं, और जब केंद्र सरकार कमजोर होती है। उदाहरण के लिए, केंद्रीय सत्ता के पतन के बाद रोमन साम्राज्य में ऐसी निजी सेनाएँ मौजूद थीं। ऐसी परिस्थितियों में खेल की गतिशीलता को आधुनिक कोलम्बिया में देखा जा सकता है। एक तरफ ड्रग कार्टेल से जुड़ी वे ताकतें हैं, जो अपनी आपराधिकता की रक्षा के लिए मौजूद हैं, और दूसरी तरफ अपहरण और जबरन वसूली का विरोध करने के लिए बनाए गए जमींदारों की ताकतें हैं, यानी मुएर्टे ए सिक्यूएस्ट्राडोर्स और ऑटोडेफेंसस यूनिडास डी कोलम्बिया। कई स्थानों पर ये निजी घरेलू अनुचर सामंती–जैसी संरचनाओं में विकसित हुए, दायित्वों और निष्ठाओं को औपचारिक रूप दिया और घरेलू सैनिक बन गए, और कुछ मामलों में उन्हें अपने नाममात्र अधिपति से सत्ता छीनने या नए संप्रभु राज्य बनाने की अनुमति देने की ताकत हासिल की।

निजी सेनाएँ तब भी बन सकती हैं जब सह–धर्मवादी खुद को वास्तविक और कथित उत्पीड़न से बचाने और अपने पंथ को आगे बढ़ाने के लिए एक साथ आते हैं, उदाहरण के लिए हुस्साइट्स, मॉर्मन नौवू लीजन और इराक में महदी सेना य अपनी प्रकृति के कारण, ऐसी मिलिशिया करिश्माई नेताओं द्वारा बनाई जाती हैं या उनके प्रभाव में आती हैं, और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा के साधन बन सकती।

Wagner Group: रूस और यूक्रेन के बीच एक साल से ज्यादा समय से जारी युद्ध के बीच रूस की ही वैगनर सेना ने रूसी रक्षा मंत्रालय के खिलाफ बगावत का ऐलान कर दिया। वैगनर ग्रुप के मुखिया येवगेनी प्रिगोझिन ने रक्षा मंत्री को उखाड़ फेंकने के लिए रूसी सेना के मुख्यालय रोस्तोव ऑन डॉन पर कब्जे के बाद मास्को की तरफ अपने लड़ाकों के कूच की घोषणा कर दी. इस पर राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन गुस्सा हो गए और उन्होंने रूस को धोखा देने का आरोप लगाते हुए इस समूह को सजा देने का वादा किया. रूस के रक्षा मंत्रालय ने प्रिगोझिन के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी कर दिया. बता दें कि रूस में हथियार बंद बगावत के आरोप में 20 साल की सजा का प्रावधान है।

रूस से टकराव के महज 36 घंटे के भीतर प्राइवेट आर्मी चलाने वाले प्रिगोझिन ने एक समझौते पर सहमति जता दी. समझौते के तहत प्रिगोझिन रूस छोड़कर बेलारूस चले जाएंगे। सहमति के बाद क्रेमलिन ने कहा है कि अब प्रिगोझिन पर कोई मुकदमा नहीं चलाया जाएगा। यही नहीं, उनके भाड़े के सैनिकों पर भी कोई केस नहीं होगा। साथ ही कहा कि अगर कुछ लोग नियमित रूसी सशस्त्र बलों में शामिल होना चाहें तो अनुबंध पर हस्ताक्षर कर सकते हैं. आखिर ये वैगनर ग्रुप क्या है, जिससे रक्षा मंत्री को उखाड़ फेंकने की धमकी देने के बाद भी रूस की सरकार ने समझौता कर लिया।

रूस के साथ समझौते के बाद अब तक ये साफ नहीं हुआ है कि प्रिगोझिन भाड़े के सैनिकों के मुखिया प्रभारी बने रहेंगे या उन्हें हटा दिया जाएगा. बता दें कि वैगनर

ग्रुप भाड़े के सैनिकों की एक प्राइवेट आर्मी है, जो रूसी सेना के साथ यूक्रेन के खिलाफ युद्ध लड़ रही थी। अनुमान लगाया जा रहा है कि हजारों वैगनर सैनिकों ने रूस की तरफ से युक्रेन के खिलाफ जंग में हिस्सा लिया। वैगनर ग्रुप खुद को निजी सैन्य कंपनी बताता है. वहीं, रूस की सरकार हाल में कुछ ऐसे कदम उठा रही थी, जिससे इस पर अंकुश रखा जा सके. ग्रुप की पहचान पहली बार 2014 में हुई थी। तब यह पूर्वी यूक्रेन में रूस समर्थक अलगाववादी ताकतों का समर्थन कर रहा था। उस समय यह एक गुप्त संगठन था, जो ज्यादातर अफ्रीका और मध्य पूर्व में सक्रिय था.सके येवगेनी प्रेप्रेगोझिन की धमकी के बाद रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने समूह को सबक सिखाने की ठान ली।

वैगनर ग्रुप में अनुमान के मुताबिक करीब 5,000 भाड़े के सैनिक हैं। इनमें से ज्यादातर रूस की विशिष्ट रेजिमेंट और विशेष बलों से आए हैं। इनकी तादाद लगातार बढ़ती जा रही है। ब्रिटेन के रक्षा मंत्रालय ने जनवरी में कहा था कि वैगनर ग्रुप अब यूक्रेन में 50,000 सैनिकों की कमान संभाल रहा है। ब्रिटेन ने बताया कि रूस को सेना के लिए लोग ढूंढने में परेशानी होने के कारण वैगनर ग्रुप ने 2022 में बड़ी संख्या में भर्ती शुरू की थी। अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने 2023 की शुरुआत में कहा था कि यूक्रेन में वैगनर के लगभग 80 फीसदी सैनिकों को जेलों से हटा लिया गया है। रूस में भाड़े की सेना अवैध होने के कारण वैगनर ग्रुप ने 2022 में खुद को एक कंपनी के रूप में रजिस्टर किया। साथ ही सेंट पीटर्सबर्ग में एक नया मुख्यालयखोला।

रॉयल यूनाइटेड सर्विसेज इंस्टीट्यूट थिंक टैंक के डॉ. सैमुअल रमानी कहते हैं कि वैगनर ग्रुप रूस के शहरों में होर्डिंग पर भर्ती के खुलेआम विज्ञापन दे रहा है। यही नहीं, रूसी मीडिया इसे देशभक्त संगठन के रूप में स्थापित कर रही है. वैगनर ग्रुप रूस की ओर से पूर्वी यूक्रेन के बखमुत शहर पर कब्जा करने में शामिल था। यूक्रेनी सैनिकों का कहना है कि उसके लड़ाकों को खुले मैदान में बड़ी संख्या में हमले के लिए भेजा गया था। शुरुआत में रूस के रक्षा मंत्रालय ने जिक्र ही नहीं किया कि वैगनर ग्रुप भी यूक्रेन के खिलाफ जंग में शामिल है। बाद में मंत्रालय ने साहसी और निस्वार्थ भूमिका निभाने के लिए इन भाड़े के सैनिकों की खूब तारीफ की।

बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक, चेचन्या में रूस के युद्धों के एक अनुभवी पूर्व रूसी सेना अधिकारी दिमित्री उत्किन भी वैगनर ग्रुप का हिस्सा रहे हैं। माना जाता है कि वह वैगनर के पहले फील्ड कमांडर थे। उन्होंने अपने रेडियो कॉल साइन के नाम पर इस समूह का नाम रखा था। वर्तमान प्रमुख येवगेनी प्रिगोझिन हैं, जो एक अमीर व्यवसायी हैं। उसे 'पुतिन का शेफ' भी कहा जाता है। दरअसल, वह एक समय तक क्रेमलिन में रसोइया का काम करता था। किंग्स कॉलेज लंदन में संघर्ष व सुरक्षा के प्रोफेसर ट्रेसी जर्मन ने बीबीसी को बताया कि वैगनर ग्रुप का पहला ऑपरेशन 2014 में रूस को क्रीमिया पर कब्जा करने में मदद करना था।

वैगनर ग्रुप का पहला ऑपरेशन 2014 में रूस को क्रीमिया पर कब्जा करने में मदद करना था।

प्रिगोझिन ने हाल के महीनों में कई बार रक्षा मंत्री सर्गेई शोइगु और यूक्रेन में सेना के प्रमुख वालेरी गेरासिमोव पर अक्षमता व यूक्रेन में लड़ने वाली वैगनर यूनिट्स को जानबूझकर कम आपूर्ति करने का आरोप लगाया। इसके बाद रूसी रक्षा मंत्रालय ने वैगनर जैसी कंपनियों को जून 2023 के आखिर तक औपचारिक रूप से नियमित रूसी सेना में शामिल होने के लिए अनुबंध पर हस्ताक्षर करने का आदेश जारी कर दिया। घोषणा में वैगनर समूह का नाम नहीं लिया गया था, लेकिन इस कदम को सरकार की ओर से ग्रुप पर ज्यादा नियंत्रण हासिल करने की कोशिश के तौर पर देखा गया। इसके बाद प्रिगोझिन ने घोषणा कर दी कि उनकी सेनाएं अनुबंधों का बहिष्कार करेंगी। यह टकराव 23 जून को चरम पर पहुंच गया।

प्रिगोझिन ने शीर्ष रूसी रक्षा अधिकारियों पर यूक्रेन में वैगनर सैनिकों पर बमबारी करने का आरोप लगाया. उन्होंने कहा कि इस हमले में बड़ी संख्या में वैगनर लड़ाकों की मौत हुई। उन्होंने कोई विवरण नहीं दिया, लेकिन एक दिन बाद उनके सैनिकों ने दक्षिणी रूसी शहर रोस्तोव–ऑन–डॉन में सैन्य मुख्यालय पर कब्जा कर लिया। इसके बाद सैन्य नेतृत्व को हटाने के लिए मॉस्को की ओर रुख करने की धमकी दी। वैगनर आर्मी बिना किसी रुकावट के मास्को के करीब आ रही थी, क्योंकि राष्ट्रपति पुतिन ने राजधानी और दूसरी जगहों की सुरक्षा कड़ी करने का आदेश दिया था।

फिर हालात में नाटकीय मोड़ आया और प्रिगोझिन ने अपने लड़ाकों को वापस बुलाते हुए घोषणा कर दी कि वह बेलारूस के राष्ट्रपति अलेक्जेंडर लुकाशेंको की मध्यस्थता के बाद रूस छोड़ने के लिए सहमत हैं। क्रेमलिन ने बाद में इस सौदे की पुष्टि की। इसमें वैगनर आर्मी के मुखिया और मॉस्को की ओर से विद्रोह कहे जाने वाली गतिविधियों में शामिल सैनिकों के खिलाफ मुकदमा चलाने को रोकने की प्रतिज्ञा शामिल थी।

वैगनर समूह के भाड़े के सैनिक 2015 से सीरिया में सक्रिय हैं। वे सरकार समर्थक बलों के साथ लड़ रहे हैं और तेल क्षेत्रों की रक्षा कर रहे हैं। लीबिया में वैगनर ग्रुप सक्रिय है, जो जनरल खलीफा हफ्तार के वफादार बलों का समर्थन करता है। सेंट्रल अफ्रीकन रिपब्लिक ने वैगनर ग्रुप को हीरे की खदानों की सुरक्षा के लिए बुलाया हुआ है. माना जाता है कि यह सूडान में सोने की खदानों की सुरक्षा भी करेगा. पश्चिम अफ्रीका में माली की सरकार इस्लामिक आतंकवादी समूहों के खिलाफ वैगनर समूह का इस्तेमाल कर रही है। वैगनर ग्रुप इन सभी कामों से पैसा कमाता है. अमेरिकी ट्रेजरी का कहना है कि वह

अपनी उपस्थिति का इस्तेमाल उन खनन कंपनियों को समृद्ध करने के लिए करता है, जिनके वे मालिक हैं। जूदा मुखिया येवगेनी प्रिगोझिन तिन का रसोइया हुआ करता था।

एक पूर्व कमांडर ने वैगनर ग्रुप से निकलने के बाद जनवरी 2023 में नॉर्वे में शरण का दावा किया था. उसका दावा है कि उसने यूक्रेन में युद्ध अपराध देखे हैं. वैगनर ग्रुप के तीन भाड़े के सैनिकों पर यूक्रेनी अभियोजकों की ओर से नियमित रूसी सैनिकों के साथ अप्रैल 2022 में कीव के पास नागरिकों को मारने और प्रताड़ित करने का आरोप लगाया गया है. जर्मन खुफिया का कहना है कि वैगनर के भाड़े के सैनिकों ने मार्च 2022 में बुचा में नागरिकों का नरसंहार भी किया है। संयुक्त राष्ट्र और फ्रांसीसी सरकार ने वैगनर सदस्यों पर मध्य अफ्रीकी गणराज्य में नागरिकों के खिलाफ बलात्कार और डकैती का आरोप लगाया है। अमेरिका की सेना ने वैगनर के भाड़े के सैनिकों पर 2020 में लीबिया की राजधानी त्रिपोली में बारूदी सुरंगें बिछाने का आरोप लगाया।

भारी रूसी भाड़े के सैनिक वैगनर सेना ने मास्को की ओर अपना रुख रोक दिया, जिससे रूसी सेना और विद्रोही भाड़े के कमांडर, व्लादिमीर पुतिन के पूर्व सहयोगी येवगेनी प्रिगोझिन के बीच तनाव कम हो गया। हालाँकि, संक्षिप्त विद्रोह ने रूसी सरकारी बलों के बीच कमजोरियों को उजागर कर दिया, येवगेनी प्रिगोझिन की कमान के तहत वैगनर समूह के सैनिक रूसी शहर रोस्तोव–ऑन–डॉन में निर्बाध रूप से जाने और मास्को की ओर सैकड़ों किलोमीटर (मील) आगे बढ़ने में सक्षम थे। रूसी सेना ने रूस की राजधानी की रक्षा के लिए हाथापाई की। सप्ताहांत में, क्रेमलिन ने शनिवार को विद्रोह रोकने के बाद प्रिगोझिन और उसके लड़ाकों पर मुकदमा नहीं चलाने का वादा किया, भले ही राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने उन्हें देशद्रोही करार दिया था।

हालाँकि, रूस में नवीनतम राजनीतिक और सैन्य विकास दुनिया भर के देशों में तैनात निजी सेना के नेटवर्क पर प्रकाश डालता है, जो आवश्यकता पड़ने पर संघर्ष से लड़ने के लिए सरकार के लिए हथियार उठाते हैं। लेकिन ये भाड़े के सैनिक या निजी सैन्य ठेकेदार, जो व्यक्तिगत लाभ के लिए सशस्त्र संघर्ष में शामिल होते हैं, अन्य सरकार द्वारा प्राप्त सुरक्षा और सशस्त्र बलों को दी गई कानूनी सुरक्षा के दायरे में नहीं आते हैं।

रूस में वैगनर विवाद के बाद, हम दुनिया के कुछ सबसे कुख्यात निजी सैन्य ठेकेदारों और कुलीन भाड़े के सैनिकों पर नजर डालते हैं।

1. वैगनर समूह : 'छोटे हरे आदमी' कहे जाने वाले वैगनर समूह 2014 में प्रमुखता में आया जब रूस ने क्रीमिया पर आक्रमण किया। अज्ञात रूसी–सैन्य–गठबंधन वाले लोग निजी स्वामित्व वाली सैन्य टुकड़ी का हिस्सा बन गए हैं जिसके बारे में कहा जाता है कि वह क्रेमलिन के प्रति अपनी निष्ठा रखता है। कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस की एक रिपोर्ट के अनुसार, वैगनर एक वाहन है जिसका उपयोग क्रेमलिन भाड़े के सैनिकों की भर्ती, प्रशिक्षण और तैनाती के लिए करता है, या तो युद्ध लड़ने के लिए या मित्रवत शासनों को सुरक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए। प्रिगोझिन द्वारा नियंत्रित, वैगनर पर अमेरिका और अफ्रीका में मानवाधिकारों का दुरुपयोग करने, नागरिकों को प्रताड़ित करने, विस्थापित करने और मारने का आरोप लगाया गया है।

2. जैतून समूह : 2001 में गठन के बाद, ऑलिव ग्रुप 2003 से इराक में आत्मघाती हमलावरों और हमलावरों से तेल कंपनियों की रक्षा कर रहा है। यूके के विशेष बलों के लोकाचार पर आधारित, ऑलिव ग्रुप मुख्य रूप से पूर्व–एसएएस (विशेष वायु सेवा) से अपने कर्मचारियों की भर्ती करता है। टीम और कथित तौर पर उन्हें बड़े वेतन पर काम पर रखती है। हैरी लेग–बर्क द्वारा शुरू किया गया, जो एक पूर्व–वेल्श गार्ड है, इंटरनेशनल पीस ऑपरेशंस एसोसिएशन, ब्रिटिश एसोसिएशन ऑफ प्राइवेट सिक्योरिटी कंपनीज और प्राइवेट सिक्योरिटी कंपनी एसोसिएशन ऑफ इराक का सदस्य है।

3. अकादमी : पहले ब्लैकवाटर के नाम से जानी जाने वाली अकादमी की स्थापना 1996 में पूर्व अमेरिकी नौसेना सील अधिकारी एरिक प्रिंस ने की थी। एक निजी अमेरिकी सैन्य समूह, इसका नाम दो बार बदला गया – 2009 में एक्सई सर्विसेज और 2011 में अकादमी। 2014 में, निजी निवेशकों के एक समूह द्वारा अधिग्रहण के बाद अकादमी ने ट्रिपल कैनोपी के साथ विलय कर कॉन्स्टेलिस होल्डिंग्स का गठन किया। ब्लैकवाटर अपनी कुख्याति के लिए सबसे अधिक जाना जाता है जिसमें बगदाद के निसौर स्क्वायर नरसंहार में 17 इराकी नागरिकों की हत्या शामिल थी। इसके अलावा, समूह, जो 20,000 लोगों की सेना और उत्तरी कैरोलिना में एक बेस का दावा करता है, कई अन्य विवादों में भी उलझा हुआ है जिसमें मानवाधिकारों का उल्लंघन शामिल है।

4. G4S सुरक्षा : वॉलमार्ट और फॉक्सकॉन के बाद सुरक्षा का दूसरा सबसे बड़ा निजी नियोक्ता, G4S दुनिया का सबसे बड़ा निजी सैन्य समूह है, जिसमें लगभग 6,20,000 कर्मचारी हैं। यह 120 से अधिक देशों में ऑपरेशन का दावा करता है और ब्रिटिश सेना के आकार का तीन गुना है। यह हवाई अड्डे की सुरक्षा, रात के समय गश्त आदि में नियमित सहायता प्रदान करता है और इसमें भारी युद्ध शामिल नहीं होता है। बिजनेस इनसाइडर की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2008 में, ळ४ ने आर्मरग्रुप को निगल लिया, जिसकी 9,000–मजबूत गार्ड सेना ने इराक में सभी गैर–सैन्य आपूर्ति काफिले के लगभग एक तिहाई की रक्षा की।

5. एरिनिस : यूनाइटेड किंगडम में स्थित एक निजी फर्म है और इराक युद्ध की शुरुआत से ही काम कर रही है।

कंपनी के प्राथमिक कार्यों में से एक वैश्विक स्तर पर 280 से अधिक देशों में तेल पाइपलाइनों और ऊर्जा संपत्तियों की रक्षा करना है, मुख्य रूप से युद्ध के बाद इराक में। विवाद के अपने उचित हिस्से में, एरिनिस पर एक अमेरिकी सैनिक की हत्या और हिरासत में कैदियों को यातना देने का आरोप लगाया गया था। ब्रिटेन की एक अन्य प्राइवेट आर्मी एरिनी इंटरनेशनल है, जिसका हेडक्वार्टर दुबई में स्थित है। इस आर्मी में 16 हजार जवान शामिल हैं। दुनियाभर के 282 जगहों पर इस आर्मी को तैनात किया गया है, लेकिन इनकी सबसे बड़ी टुकड़ी अफ्रीका में तैनात है। इस आर्मी को रिपब्लिक ऑफ कॉन्गो में आयरन, ऑयल और गैस प्रोजेक्ट्स को सुरक्षा देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

6. ऑस्ट्रेलिया का यूनिटी रिसोर्स ग्रुप : ऑस्ट्रेलिया के पास यूनिटी रिसोर्स ग्रुप नाम की प्राइवेट आर्मी है, जिसमें दुनियाभर के 1200 से अधिक जवान शामिल हैं। इसकी पूरी जिम्मेदारी अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और ग्रेट ब्रिटेन की रिटायर्ड अफसरों को दी जाती है। यह ग्रुप ऑस्ट्रेलिया के साथ अफ्रीका, अमेरिका, यूरोप और सेंट्रल एशिया में भी काम करती है। बगदाद की ऑस्ट्रेलियाई एम्बेसी की सुरक्षा की जिम्मेदारी यूनिटी रिसोर्स ग्रुप के पास है। लेबनान में शांतिपूर्ण और सुचारू रूप से चुनाव कराने के लिए इसी आर्मी को तैनात किया गया था। इसके साथ ही, बहरीन में इसी आर्मी को तैनात करके प्राइवेट ऑयल कंपनी की मदद की गई थी।

7. अफगानिस्तान और बहरीन में फैली ब्रिटेन की प्राइवेट आर्मी : एजिस डिफेंस सर्विसेज एक ब्रिटिश निजी सैन्य और निजी सुरक्षा कंपनी है, जिसके विदेशी कार्यालय अफगानिस्तान, संयुक्त अरब अमीरात, इराक, सऊदी अरब, लीबिया, सोमालिया और मोजाम्बिक में हैं । इस आर्मी की शुरुआत साल 2002 में की गई थी।इसका मुख्यालय लंदन,यूनाइटेड किंगडम में स्थित है। फिलहाल, इस आर्मी में लगभग 5000 जवान शामिल हैं, जो पूरे अफगानिस्तान और बहरीन में फैले हुए हैं। ब्रिटेन में इस तरह की कई प्राइवेट आर्मी है।

8.डायनकॉर्प : अमेरिका के वर्जीनिया की प्राइवेट आर्मी डायनकॉर्प को 1946 में बनाया गया था। इसका हेड क्वार्टर वर्जीनिया में स्थित है। यह 10 हजार जवानों वाली आर्मी है, जो अफ्रीका, पूर्वी यूरोप और लैटिन अमेरिका में सक्रिय है। इस प्राइवेट आर्मी ने पेरू के एंटी ड्रग मिशन समेत सोमालिया और सूडान में भी कई बड़े मिशन को अंजाम दिया है।यह आर्मी चर्चा में तब आई थी, जब इसने कोलंबिया के बागियों के साथ जंग लड़ी। अमेरिका के पास चार अन्य प्राइवेट आर्मी ग्रुप है, जिनमें 83 हजार लड़ाके हैं।

9. एशिया सिक्योरिटी ग्रुप : अफगानिस्तान के पास भी अपनी प्राइवेट आर्मी है, जिसका नाम एशिया सिक्योरिटी ग्रुप है। इसका हेड क्वार्टर काबुल में बनाया गया है। इस आर्मी में 600 जवानों को शामिल किया गया है। अमेरिका ने कई बार अपने मिशन को सफल बनाने के लिए इस आर्मी को अपने साथ शामिल किया है।एशिया सिक्योरिटी ग्रुप के साथ अमेरिकी सेना ने लाखों डॉलर का कॉन्ट्रैक्ट किया है। इस ग्रुप में भाड़े के सैनिकों की भर्ती अमेरिका के प्राइवेट आर्मी डायनकॉर्प द्वारा की जाती है।

ये अन्य उदाहरण हैं :

• सोहेई : जापान के योद्धा भिक्षुओं की वफादारी राज्य या सम्राट के प्रति नहीं बल्कि उनके मठों के प्रति थी।

• ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रेसीडेंसी सेनाएँ, और डच ईस्ट इंडिया कंपनी की सशस्त्र सेनाएँ। दोनों के पास शक्तिशाली सेनाएं और नौसेनाएं थीं, जो अपनी मातृभूमि के आकार से कई गुना बड़े क्षेत्रों पर प्रशासन करते थे।

• ब्रिटिश राज के दौरान भारतीय रियासतों की सेनाएँ, जो मुख्य रूप से औपचारिक कर्तव्यों, उनके राजकुमारों की सुरक्षा और उनके राज्यों के भीतर आंतरिक सुरक्षा के लिए थीं।

• 1916 में युआन शिकाई की मृत्यु के बाद सरदार युग के दौरान चीनी जुनफास।

• जोहोर राज्य का रॉयल जोहोर सैन्य बल और मलेशिया में जोहोर के सुल्तान का निजी शाही रक्षक।

• विक्टुअल ब्रदर्स, एक समुद्री डाकू भाईचारा जो कुछ समय के लिए बाल्टिक में एक शक्ति बन गया।

• एथोल हाईलैंडर्स, एक विशुद्ध रूप से औपचारिक समूह जो यूरोप में एकमात्र निजी सेना होने का दावा करता है।

• प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मन फ्रीइकॉर्प्स आमतौर पर केवल अपने कमांडरों के प्रति वफादार थे, न कि वाइमर गणराज्य के प्रति राष्ट्रपति रमजान कादिरोव के अधीन चेचन्या में कादिरोवत्सी ।

एक अर्थ में इसमें कोई रहस्य नहीं है कि रूस वैगनर समूह का उपयोग क्यों करता है यह रूसी राज्य को वही लाभ पहुंचाता है जो अन्य राज्यों को, यह राज्य के बजटीय संसाधनों को बचाता है लोगों को अनुबंध पर नियुक्त करके, लंबी अवधि के भुगतान की आवश्यकता को समाप्त किया जा सकता है। यह कभी–कभी नियमित सैनिकों में कौशल सेट जोड़ता है, यह राज्य के कार्यों के लिए प्रशंसनीय अस्वीकार्यता प्रदान करता है।

वैगनर ग्रुप को हाल ही में कई प्रमुख विफलताओं का सामना करना पड़ा है जिसमें सीरिया के डेर एल जौर में पराजय, उसकी खूनी हार भी शामिल है और उसके बाद मोजाम्बिक से वापसी, और मदद करने में उसकी विफलता हफतार ने लीबिया में त्रिपोली पर कब्जा कर लिया। वैगनर ग्रुप ने भी प्रदर्शन किया है मानवाधिकारों और नागरिक जीवन के प्रति लगातार उपेक्षा। इस दौरान, आजीवन अपराधी येवगेनी प्रिगोझिन विदेशी प्राकृतिक संसाधन लूट रहा है और अफ्रीका में आबादी के प्रति घृणा और मध्य पूर्व, रूसी सेना के लिए किसी भी स्थानीय समर्थन को कम करने के लिए दुस्साहस।

अद्भुत आध्यात्मिकता से ओतप्रोत सांस्कृतिक विरास संरक्षण का प्रयास औरण आरती महोत्सव

जुगत सिंह करनोत
औरण गौचर संरक्षण प्रांत प्रमुख जोधपुर

मारवाड़ की पावन धरा से एक आगाज पर्यावरण संरक्षण औरण गौचर संरक्षण के ध्येयनिष्ठ मिशन के रूप में औरण आरती महोत्सव कोलू पाबूजी धाम पर सताईस जून को संत सानिध्य में पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के राष्ट्रीय संयोजक गोपाल जी आर्य, क्षेत्र प्रचारक राजस्थान निम्बाराम जी के आतिथ्य में भव्य दिव्य, आध्यात्मिक भाव से ओतप्रोत अलौकिक अनूठा समाज का स्वेच्छा से स्वस्फूर्त भाव से सर्व समाज द्वारा एक सौ एक जोत से महाआरती व प्रकृति वंदना के रूप में औरण की परिक्रमा जोत मंत्रोच्चार के साथ जो आध्यात्मिक भाव से ओतप्रोत प्रकृति वंदना का देवदुर्लभ क्षण तो था ही साथ ही सामाजिक समरसता का अनुपम आयोजन जो मारवाड़ के कोलू पाबूजी धाम पर देखा गया, गौरक्षार्थ जुझारो के रक्त से रंगी पावन धरा की वंदना के रूप में भारत की सांस्कृतिक छवि का स्वरूप था।

औरण आरती महोत्सव कोलू पाबूजी धाम संयोजक जुगत सिंह करनोत ने बताया कि पाबूजी राठौड़ मध्यकालीन भारत के गौरक्षार्थ जुझांर हुए जिन्होंने प्रणपालन के लिए चंवरी के तीसरे फेरें में गठजोड़ा काट अपना बलिदान गायों की रक्षा के लिए दे दिया, पाबुजी राठौड़ मारवाड़ के लोकदेवता के रूप में पूजित है। पाबुजी राठौड़ के नाम देवभूमि के रूप में बीस हजार बीघा औरण भूमि कोलू पाबूजी तहसील देचू जोधपुर राजस्थान हैं जो पूर्ण रूप से संरक्षित हैं।

गायों के स्वच्छंद विचरण के लिए हैं, वन्यजीवों के स्वच्छंद विचरण के लिए हैं, हरी टहनी दांतून तक के लिए नहीं काटना यानि हरे वृक्षों की कटाई का निषिद्ध क्षेत्र हैं ऐसे गौरक्षार्थ जुझार पाबुजी राठौड़ के औरण की परिक्रमा, आरती, रात्रि–जागरण, माटा वादन द्वारा एक भव्य दिव्य समारोह आयोजित हुआ सामाजिक समरसता का बेजोड़ उदाहरण है। सताईस जून को कोलू पाबूजी धाम पर दोपहर तीन बजे औरण परिक्रमा वाहनों द्वारा जिसमें सबसे आगे दस ऊंट सवार, दस घुड़सवार, ट्रैक्टर टोली में जोत यज्ञ मंत्रोच्चार करने वाले 11पंडित, पच्चीस टोली हरजस करने वाली महिलाओं की टोलियां सहित प्रकृति वंदना के रूप में पच्चीस किमी की परिक्रमा रही औरण सीमा पर गांव वालों द्वारा परिक्रमा मार्ग में जगह–जगह पुष्प वर्षा कर जलपान फलाहार के साथ गगनभेदी जयकारों से स्वागत किया। औरण आरती सायं सात बजे पाबुजी राठौड़ के मंदिर परिसर में एक सौ एक जोत से महाआरती हुई जिसमें सात हजार महिला पुरुषों युवाओं की संत महात्माओं के सानिध्य में सहभागिता रही एक सौ एक गाय के गोबर के उपलो व गौ घीरत से जोत व गाय के घी के इक्यावन सौ मिटी के दीपकों से महाआरती अद्भुत अलौकिक, आध्यात्मिक भाव से ओतप्रोत भव्य और दिव्य स्वरूप में औरण गौचर भूमि संरक्षण के संकल्प के रुप में पहली बार हुई, एक पहल औरण गौचर संरक्षण के संकल्पित प्रयास के रूप में पर्यावरण संरक्षण गतिविधि द्वारा समाज जागरण के लिए। औरण आरती औरण शब्द अरण्य से बना है जो वैदिक काल का प्रचलन में आया शब्द हैं जिसका तात्पर्य है अरण्य यानी सघन वृक्षों का स्थल जहाँ कभी पेड़ पौधों की कटाई नहीं होती, वो क्षेत्र गायों के चारागाह के लिए है, जंगली जीवों के स्वच्छंद विचरण के लिए है, वो जमीन इष्ट देव या गौरक्षार्थ जुझांर या धर्म और संस्कृति के लिए प्राण न्यौछावर करने वाले लोकदेवता के नाम से औरण भूमि जानी जाती है, वो भूमि जो अपने इष्ट देव के नाम से गायों के चारागाह, वन्यजीवों के लिए, पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य, जलसंरक्षण के लिए रियासत काल में राजा या जागीरदार द्वारा अपनी भूमि में से आरक्षित की जाती थी जो सार्वजनिक

हितार्थ समर्पित होती थी एक बार औरण के रूप में चिह्नित आरक्षित जमीन पीढी दर पीढी औरण ही रहेगी, औरण भूमि की कुछ मान्यताएँ निर्धारित थी, उसमें कुलदेवी, कुलदेवता या इष्टदेव का पूजा स्थान मंदिर या थड़ा होगा,उस औरण क्षेत्र में गांव या नगर के जल व्यवस्था के लिए कुआँ, बावड़ी, नाडी, तालाब, आगोर पायतान जल आवक क्षेत्र होगा, औरण क्षेत्र में एक बार दूध की धार यानी रेखांकन करने के बाद कभी हल से जुताई नहीं होगी, गायों, वन्यजीवों के स्वच्छंद विचरण के लिए वो क्षेत्र हमेशा हमेशा के लिए पीढ़ी दर पीढ़ी आरक्षित रहेगी, उस क्षेत्र में हरे वृक्षों की कटाई तथा जंगली जीवों का शिकार वर्जित होगा औरण क्षेत्र में किसी तरह से जंगली जीवों को आहत नहीं किया जायेगा ऐसी परम्परा निर्धारित थी, औरण क्षेत्र ईश्वरीय स्वरूप में पूजनीय माना गया है, नाडी, तालाब, कुआँ बावड़ी वृक्षों के पूजन स्वरुप मंत्रोच्चार ज्योत के साथ औरण परिक्रमा औरण पूजन की परम्परा पीढ़ियों से चली आ रही है वैशाख पूर्णिमा और कृष्ण जन्माष्टमी के दिन प्रकृति वंदना के रूप में औरण आरती, औरण परिक्रमा और जल संरक्षण के रूप में तालाब पूजन हवन–यज्ञ के साथ राजस्थान के हर गांव में एक परम्परा हैं। पर्यावरण संरक्षण की पहल के रूप में देखा जाए तो औरण अद्भुत आध्यात्मिकता भाव से ओतप्रोत सांस्कृतिक विरासत के रूप में एक धरोहर है। ग्लोबल वार्मिंग की चिंता से आज पुरा विश्व चिंतित हैं वो चिंता हमारे पूर्वजों ने हजारों वर्ष पूर्व की अपने आराध्य देव के नाम भूमि का एक हिस्सा आरक्षित कर पर्यावरण संरक्षण–पौधारोपण कर उस क्षेत्र में हरे वृक्षों की कटाई निषिद्ध की, गायों और पशुधन के चारागाह विकास के प्रयास किए, पक्षी पंखेरु व वन्यजीवों के संरक्षण के लिए औरण क्षेत्र को शिकार वर्जित क्षेत्र बनाया, जलसंरक्षण के लिए औरण क्षेत्र में नाडी, तालाब, आगोर, पायतान, कुआँ बावड़ी, बनाकर एक सुरक्षित संरक्षित करने का प्रयास किया जो जल संरक्षण का उत्कृष्ट उदाहरण है साथ ही औरण को आध्यात्मिक भाव से जोड़ा ताकि उस क्षेत्र को देवभूमि मान उस क्षेत्र के किसी मान बिन्दु का कोई उल्लंघन नही करें, पर्यावरण संरक्षण के रूप में जल संरक्षण वन्यजीव संरक्षण, पेड़ पौधों का संरक्षण के रूप में एक परम्परा के रूप में जन–मानस में मान्यताएँ निर्धारित की जो हज़ारों साल बाद भी चल रही है। औरण गौचर आगोर पायतान जल आवक क्षेत्र का संरक्षण का संकल्प व प्रयास देश की आजादी के बाद कई वर्षों तक तो चलता रहा लेकिन धीरे–धीरे रियासत कालीन परम्पराओं पर भौतिक वादी विचार धारा हावी होने लगी और लाखों बीघा जमीन जो औरण गौचर, आगोर पायतान जल आवक क्षेत्र के रूप में औरण जो देवभूमि के रूप जानी जाती हैं सार्वजनिक हित की भूमि है भूमाफियाओं की नज़र चढ़ने लगी, मान्यताएँ व परम्परा आधुनिक युग की भौतिक वादी विचार में न्यून होने लगी, औरण भूमि के साथ साथ जल संग्रह केंद्र नाडी, तालाब, आगोर, पायतान कुआँ, बावड़ी की अनदेखी होने लगी। पूर्वजों की धरोहर संरक्षण के अभाव में बिखरने लगी जगह जगह अतिक्रमण कर सांस्कृतिक विरासत को नुक़सान पहुंचाया जाने लगा। सरकार के राजस्व रिकार्ड में औरण को देव भूमि के रूप में दर्ज कर एक अहस्ताक्षरणीय भूमि माना गया लेकिन उसके रखरखाव के लिए किसी सरकारी एजेंसी की जिम्मेदारी निर्धारित नहीं की। जिस तरह गौचर, आगोर, पायतान जल आवक क्षेत्र चारागाह, पड़त सिवाय चक सामलाती जमीन के संरक्षण रखरखाव के लिए ग्राम पंचायतों, राजस्व विभाग को संरक्षण का अधिकार दिया, वनभूमि को वनविभाग के संरक्षण में रखरखाव का अधिकार दिया। लेकिन औरण भूमि को सेटलमेंट के समय देवभूमि के रूप में परिभाषित कर अहस्ताक्षरणीय भूमि जो वन भूमि के समकक्ष माना गया लेकिन उसके रखरखाव व संरक्षण के लिए किसी सरकारी विभाग या धरोहर संरक्षण संस्थान की जिम्मेदारी तय नहीं की गई जिसकी वजह से कई बार न्यायालय द्वारा अतिक्रमणकारियों के विरुद्ध आदेश के बाद भी अतिक्रमण मुक्त की कार्रवाई में बाधा उत्पन्न होती है, इसलिए आज औरण रूपी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण के लिए राज्य सरकार को नीति निर्धारण, दिशानिर्देश जारी कर गायों के हक की जमीन, वन्यजीवों के हक की जमीन, जल संरक्षण की आधार स्तंभ जमीन के संरक्षण के लिए उचित कदम के रूप में नीति निर्धारण की महती आवश्यकता है। सीमा क्षेत्र जैसलमेर में लाखों बीघा औरण भूमि हैं जिसमें एक लाख उन्नतीस हजार बीघा भादरीयाजी औरण, पच्चीस हजार बीघा देगराय औरण के रूप में राजस्व रिकार्ड में दर्ज है जबकि दो दर्जन से अधिक गाँवों में औरण भूमि के रूप में हैं लेकिन सेटलमेंट के समय उस देवभूमि को सिवाय चक सामलाती जमीन के रूप में दर्ज कर लिया गया उस समस्त देवी–देवताओं के औरण के रूप में देवभूमि को राजस्व रिकार्ड में औरण भूमि दर्ज करना अनिवार्य है अन्यथा ये लाखो बीघा हमारे पूर्वजों की विरासत भूमाफियाओं व सौलर कम्पनियों के हाथों भेंट चढ़ जायेगी, जैसलमेर जिला की औरण भूमि राजस्व रिकार्ड में दर्ज करवाने के लिए विगत कई वर्षों से ओरण परिक्रमा, ओरण आरती के आयोजन हो रहे हैं सरकार के ध्यानाकर्षण के लिए औरण गौचर संरक्षण टीम, वन्यजीव संरक्षण टीम, गौशाला संचालकों, पर्यावरण प्रहरियों के जनजागरण अभियान के रूप में औरण आरती, औरण परिक्रमा प्रकृति वंदना के रूप कर समाज जागरण का प्रयास किया जा रहा है पांच मई को भादरिया राय जैसलमेर औरण आरती महोत्सव व सताईश जून को कोलू पाबूजी धाम जोधपुर में एक सौ एक जोत व हजारों गौ घीरत दीपक द्वारा प्रकृति वंदना के रूप में पर्यावरण संरक्षण के ध्येय से हजारों की सहभागिता समारोह आयोजित हुआ जिससे प्रेरणा लेकर गाँव ढाणी में बैठा व्यक्ति स्वप्रेरणा से, स्वस्फूर्त रुप से अपने पूर्वजों की धरोहर औरण संरक्षण के लिए संकल्पित प्रयास करें। इसी उद्देश्य से समाज जागरण का संकल्पित प्रयास औरण आरती महोत्सव समाज का, समाज के लिए,समाज के द्वारा आयोजन हैं औरण आरती की समस्त व्यवस्था स्वेच्छा से सर्व समाज के भामाशाह की सहभागिता से होती है।

अल नीनो से बढ़ते तापमान के साथ खेती पर मंडराता खतरा

डॉ. परमवीर 'केसरी'
शोध विद्यार्थी

खतरा यह है कि यदि उत्पादन में गिरावट आई तो महंगाई और भी बढ़ जाएगी। सरकार को अल नीनो से पैदा होने वाले खतरे को ध्यान में रखते हुए खाद्य पदार्थों के मूल्यों को नियंत्रित करने के उपाय करने चाहिए।

अल नीनो के बढ़ते प्रभाव के चलते जहां तापमान में बढ़ोतरी का खतरा मंडरा रहा है, वहीं खेती पर बढ़ते संकट को भी नकारा नहीं जा सकता। विश्व मौसम विज्ञान संगठन (डब्ल्यूएमओ) की मानें, तो बीते सात सालों में बन रही अल नीनो के चलते तापमान में वृद्धि के साथ मौसम में प्रतिकूलता के कारण खेती पर भी दुष्प्रभाव पड़ सकता है। इसके चलते खाद्य वस्तुओं के दामों में तेजी की आशंका को नकारा नहीं जा सकता।

डब्ल्यूएमओ की रिपोर्ट में यह खुलासा किया गया है कि इस वर्ष की दूसरी छमाही में अल नीनो की गतिविधि जारी रहने की 90 फीसदी आशंका है। डब्ल्यूएमओ के महासचिव प्रोफेसर पेट्टेरी तालास के अनुसार अल नीनो की वजह से दुनिया में तापमान के सारे रेकार्ड टूटने की आशंका है। खास बात यह है कि यह प्राकृतिक रूप से पैदा होने वाला जलवायु पैटर्न है, जो मध्य और पूर्वीय उष्णकटिबंधीय प्रशांत महासागर में समुद्र की सतह के तापमान के बढ़ने से जुड़ा है। गौरतलब यह है कि तीन जुलाई को दुनिया भर में औसत तापमान 17.01 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया जिसने अगस्त 2016 में बनाए गए 16.92 डिग्री सेल्सियस के रेकार्ड को तोड़ दिया। तीन जुलाई को अमरीका में टैक्सास और दक्षिणी क्षेत्र के निवासियों को रेकार्ड गर्मी और चीन के लोगों को तेज लू का सामना करना पड़ा। यहां तक कि अंटार्कटिका में भी तापमान में बढ़ोतरी दर्ज की गई। वहां जुलाई में तापमान 8.7 डिग्री दर्ज किया गया।

दुनियाभर के वैज्ञानिकों ने काफी पहले से ही यह चेतावनी दे दी थी कि साल 2023 में अल नीनो अपना असर दिखाएगा। इस बार तीन महीने का इंडेक्स बता रहा है कि प्रशांत महासागर में अल नीनो के सक्रिय रहने का खतरा 98 फीसदी तक बढ़ गया है। इंडेक्स के अनुसार औसत तापमान बहुत ऊपर जा चुका है। डब्ल्यूएमओ प्रशांत महासागर की सतह के गहन अध्ययन के बाद भारत समेत दुनिया के देशों को पहले ही सतर्क कर चुका है। मौसम विज्ञानी भी चेता चुके हैं कि अल नीनो के प्रभाव के कारण खरीफ की फसलें भी प्रभावित होंगी। यह बात सही है कि पूरी तरह सूखे की स्थिति नहीं रहेगी, क्योंकि बीच–बीच में कभी–कभी वर्षा भी होती रहेगी। आइएमडी ने सामान्य वर्षा का तो अनुमान व्यक्त किया था, लेकिन अल नीनो के खतरे से कभी इनकार भी नहीं किया था। सच्चाई तो यह भी है कि अल नीनो के असर को भारत पहले भी झेल चुका है। 2015 में भी भारत ने मानसूनी बारिश में 15 फीसदी की कमी का सामना किया था। यहां तक कि गंगा के मैदानी इलाकों में 25 फीसदी तक कम बारिश हुई थी। देश के कुछ राज्यों को तो खरीफ की फसल में भारी नुकसान उठाना पड़ा था। कहा गया था कि इस बार भी पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा, झारखंड सहित कुछ राज्यों को वर्षा की औसत मात्रा में कमी का सामना करना पड़ेगा, जबकि पूरा पखवाड़ा वर्षा से भरपूर रहेगा। इसके बाद खेतों में बुआई हो चुकी होगी। अगर बीच में थोड़ी बहुत वर्षा होती भी रहेगी तो उससे ज्यादा कोई दुष्प्रभाव पडने वाला नहीं है। लेकिन देश के पठारी और ऊपरी इलाके पानी की कमी से जूझते रहेंगे।

इस वक्त टमाटर के दाम आसमान छू रहे हैं, दाल,चावल, गेहूं के दामों को नियंत्रित करने के लिए सरकार को काफी माथापच्ची करनी पड़ रही है। इसके पीछे जो अहम कारण हैं, उनमें भू–राजनीतिक तनाव में बढ़ोतरी, ग्लोबल फाइनेंशियल सिस्टम में अस्थिरता, अल नीनो का असर भी है। कीमतों में आगे भी बढ़ोतरी हो सकती हैं। न्यूनतम समर्थन मूल्य में बढ़ोतरी से भी कीमतें भी बढ़ी हैं। खतरा यह है कि यदि उत्पादन में गिरावट आई तो महंगाई और भी बढ़ जाएगी। सरकार को अल नीनो से पैदा होने वाले खतरे को ध्यान में रखते हुए खाद्य पदार्थों के मूल्यों को नियंत्रित करने के उपाय करने चाहिए।

सीमा संवाद श्रृंखला : प्रांत स्तरीय कार्यक्रम

विषय – कारगिल : महानता, वीरता और बलिदान की एक गाथा
स्थान– हरियाणा भवन, कापरनिकस मार्ग मंडी हाउस
(मुख्य वक्ता – लेफ्टिनेंट जनरल वाई. के. जोशी)

रिपोर्ट संकलनकर्ता : राघवेंद्र नाथ त्रिपाठी (सदस्य डिजिटल टीम, सीमा जागरण मंच)

दिनांक 23 जुलाई 2023 को सीमा जागरण मंच द्वारा हरियाणा भवन, कापरनिकस मार्ग मंडी हाउस में नौवां सीमा संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। ज्ञातव्य है कि सीमा जागरण मंच द्वारा सीमावर्ती क्षेत्रों के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए दिल्ली में प्रांत स्तर पर हर महीने एक कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। इस बार आयोजित होने वाले सीमा संवाद कार्यक्रम का विषय कारगिल : महानता, वीरता और बलिदान की एक गाथा पर आधारित था। सीमा जागरण मंच इस वर्ष कारगिल सप्ताह मना रहा है जिसकी शुरुआत नेशनल वार मेमोरियल पर शहीदों को श्रद्धांजलि देकर की गई। कार्यक्रम में लेफ्टिनेंट जनरल वाई. के. जोशी, मुख्य वक्ता के रूप में अपने व्याख्यान द्वारा श्रोताओं की वैचारिकी को समृद्ध किया। बताते चलें कि लेफ्टिनेंट जोशी (13 JAK RIF) ने करगिल युद्ध के दौरान अपने उत्कृष्ट नेतृत्व से देश का ध्यान खींचा और अपनी यूनिट को अभूतपूर्व सफलता दिलाई।

ऑपरेशन विजय में उनकी कमान के तहत यूनिट को कुल 37 वीरता पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिसमें दो परम वीर चक्र, आठ वीर चक्र और 14 सेना पदक शामिल हैं। लेफ्टिनेंट जनरल जोशी को वीर चक्र और उनकी यूनिट के कैप्टन विक्रम बत्रा को परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया था। लेफ्टिनेंट जनरल वी.के. चतुर्वेदी, लेफ्टिनेंट जनरल नितिन कोहली तथा लेफ्टिनेंट जनरल आर.पी.एस. भदौरिया भी कार्यक्रम में सहयोगी वक्ता की भूमिका में सम्मिलित रहे।कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय के आपदा प्रबंधन विभाग में सहायक आचार्य डॉ. दीपनारायण पांडे द्वारा की गई। स्वागत वक्तव्य के बाद उन्होंने लेफ्टिनेंट जनरल वी.के. चतुर्वेदी को आगे की भूमिका के लिए आमंत्रित किया।

प्रारंभ में वी.के. चतुर्वेदी ने सीमा संवाद के पहले के हो चुके व्याख्यान के हवाले से आज के कार्यक्रम की प्रासंगिकता को चिन्हित किया तथा अब तक संपन्न हुए सभी सफल कार्यक्रम के लिए श्रोताओं और वक्ताओं का आभार भी ज्ञापित किया।इसके पश्चात लेफ्टिनेंट जनरल वी.के. चतुर्वेदी ने भारतीय पौध यानि कि– भारतीय बच्चे जो कल के भारत का भविष्य होंगे, उन्हें कुछ इन पंक्तियों के माध्यम से याद किया – चन्दन है इस देश की मिट्टी, तपोभूमि हर ग्राम है हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा–बच्चा राम है। लेफ्टिनेंट चतुर्वेदी ने कारगिल युद्ध में शहीद हुए जवानों के प्रति श्रद्धा व्यक्त की तथा इस युद्ध में अपनी सक्रिय भूमिका निभा चुके लेफ्टिनेंट जनरल वाई.

के. जोशी की गरिमामयी उपस्थिति पर उत्साह सहित उन्हें आमंत्रित किया। लेफ्टिनेंट जनरल वाई. के. जोशी ने 1999 के कारगिल युद्ध को याद करते हुए कहा कि हालात बेहद खराब थे, आतंकियों ने ऊंची चोटियों पर बंकर बना लिए थे।

तोलोलिंग और अन्य चोटी जैसे प्वाइंट 5140, प्वाइंट 4875, प्वाइंट 5285 आदि की कठिन और दुर्गम चढ़ाई को याद करते हुए उन्होने बताया कि कैसे उन्होने ऊंचाई पर बैठे दुश्मन के बंकर को तबाह किया। ...वो आगे बढ़ते जा रहे थे बिना इस बात को अपने ऊपर हावी होने दिये कि– उनकी टोली के जवान जो हाथ में बंदूख लेकर लड़ रहे थे वो शहीद हुए जा रहे थे। अदम्य साहस, वीरता, पराक्रम और जुनून की मिशाल कायम करते हुए हमारे जवानों ने कारगिल युद्ध में विजय प्राप्त की। कारगिल की ऊंची चोटियों पर अपना परचम लहराने के बाद हमारे जवानों ने पाकिस्तानी सेना के जवानों के ठिकाने से उनके परिचय पत्र, उनके द्वारा प्रयोग की गई युद्ध समग्रियों को अपने कब्जे मे लिया।

युद्धस्थल की चर्चा करते हुए जोशी जी ने बताया कि पाकिस्तानी जवानों ने हार की डर से चोटी की दूसरी तरफ से रस्सी लगाकर एक भागने की योजना भी बनाई थी। इससे यह पता चलता है कि हमारी सेना का हौसला कितना बुलंद था। अफसोस की बात है कि पाकिस्तान ने युद्ध के बाद अपने शहीदों का पार्थिव शरीर भी लेने से इनकार कर दिया। दाद देनी होगी हमें हमारे जवानों की जिन्होंने दुश्मन के मरने के बाद उनके पार्थिव शरीर को सम्मान पूर्वक अंतिम विदाई दी। लेफ्टिनेंट जनरल वाई. के. जोशी ने बताया कि जवानों को देश की रक्षा करने के लिए देश पर न्यौछावर होकर सर्वोच्च बलिदान देने का भाव उन्हें प्रेरित करता है। साथ ही उन्होने कुछ विचारणीय बिन्दुओं का उल्लेख किया जैसे– हर चीज आसान होने के पहले कठिन होती है, कोई भी चीज संभव होने का विश्वास, डर का सामना करना, बदलाव, सुधार और नवाचार के प्रति प्रतिक्रियाशील रहना ...आदि।

उन्होंने जोर देकर कहा कि इन सभी बातों के प्रति हमें सजग रहना चाहिए। उनके वक्तव्य के बाद लेफ्टिनेंट जनरल वी.के. चतुर्वेदी, लेफ्टिनेंट जनरल नितिन कोहली तथा लेफ्टिनेंट जनरल आर.पी. एस. भदौरिया ने उन्हें धन्यवाद दिया और ईश्वर से कामना की कि वे शहीदों की आत्मा को शांति प्रदान करें।

अंत में सीमा जागरण मंच के दिल्ली प्रांत के महामंत्री दीपनारायण पांडे जी ने जोशी जी के वक्तव्य को भाव विभोर करने वाला बताया तथा कहा कि आज हमने जोशी जी द्वारा अनुभव की गई संवेदना को महसूस किया अर्थात संवेदना की संवेदना को महसूस किया।दीप जी ने सभी वक्ताओं और आगंतुकों को धन्यवाद ज्ञापित किया। ...और अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

जय हिन्द!!!!

सीमा संवाद–नोएडा विभाग

रिपोर्ट संकलनकर्ता : डॉ. श्रीश पाठक

इतिहास के पन्ने हों, उपलब्ध ऐतिहासिक मानचित्र हों या मौखिक इतिहास वाचन की सतत् धारा जो पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है, इन सभी स्रोतों से सर क्रीक पर भारतीय दावा ही पुष्ट होता है।' उपरोक्त उद्गार आदरणीय श्री जीवन जी भाई साहब के हैं। वे सीमा जागरण मंच दिल्ली प्रांत के नोयडा विभाग द्वारा दिनाँक 20 जुलाई 2023 को आयोजित सीमा संवाद में मुख्य वक्ता की भूमिका में रहे। नोयडा विभाग के द्वारा जुलाई माह के सीमा संवाद का विषय, 'सर क्रीक विवाद : चुनौतियाँ एवं भविष्य' निश्चित किया गया था।

आदरणीय जीवन जी, सीमा जागरण मंच, गुजरात प्रांत के प्रदेश महामंत्री हैं और आपका इस विषय से संबंध न केवल सैद्धांतिकी स्तर पर है अपितु आपको जमीनी वस्तुस्थिति का दीर्घकालिक अनुभव है। इस विषय पर आपका मार्गदर्शन विशद, विविध एवं रोचक प्रसंगों से ओतप्रोत रहा।

कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्बोधन सीमा जागरण मंच, दिल्ली प्रांत के ही कोषाध्यक्ष माननीय श्री आलोक अग्रवाल जी का रहा। आपने विषय को विस्तार देते हुए रेखांकित किया कि सर क्रीक विवाद में भारतीय पक्ष न केवल मजबूत है अपितु निरंतर उसे वैश्विक एवं क्षेत्रीय स्वीकृति भी मिलती जा रही है। निकट भविष्य में देश बिना किसी बाधा के सर क्रीक के विविध आयामों का उपयोग राष्ट्रहित में कर सकेगा।

कार्यक्रम में विशिष्ट उपस्थिति, सीमा जागरण मंच, दिल्ली प्रांत के अध्यक्ष आदरणीय लेफ्टिनेंट जनरल श्री नितिन कोहली जी की रही, वहीं कार्यक्रम का प्रभावी संचालन किया ममता जी ने। अतिथि स्वागत एवं औपचारिक स्वागत की भूमिका जहां श्रीश पाठक जी एवं देशराज मीणा जी ने निभायी वहीं आभार ज्ञापन नोयडा विभाग के युवा आयाम प्रमुख आशीष केसरवानी जी ने किया। कार्यक्रम का समापन नोयडा विभाग के बिहार प्रभारी मुकेश शंकर भारती जी ने शांति मंत्र के साथ किया।